पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2014-16

ओ३म्

शृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-१८, अंकः-१०, अप्रैल, सन्-२०१६, सं०-२०७३ वि०, दयानंदाब्द १६२, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११७; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

रामनवमी पर विशेष

श्रीराम का सम्पूर्ण जीवन मर्मस्पर्शी घटनाओं से भरा पड़ा है

हर स्थल पर उनकी दिव्य प्रभा देखते ही बनती है

-आचार्य रामचन्द्र शुक्ल-

प्रबंधकार कवि की भावुकता का सबसे अधिक पता यह देखने से चल सकता है कि वह किसी आख्यान के अधिक मर्मस्पर्शी स्थलों को पहचान सका है या नहीं। राम कथा के भीतर ये स्थल अत्यंत ममस्पर्शी हैं-राम का अयोध्या त्याग और पथिक के रूप में वनगमन; चित्रकूट में राम और भरत का मिलन; शबरी का आतिथ्य; लक्ष्मण को शक्ति लगने पर राम का विलाप; भरत की प्रतीक्षा। इन स्थलों को गोस्वामी जी ने अच्छी तरह पहचाना है; इनका उन्होंने अधिक विस्तृत और विशद वर्णन किया है।

एक सुंदर राजकुमार के-छोटे भाई और स्त्री को लेकर-घर से निकलना और वन वन फिरने से अधिक मर्मस्पर्शी दृश्य क्या हो सकता है? इस दृश्य का गोस्वामी जी ने मानस, कवितावली और गीतावली तीनों में अत्यंत सहृदयता के साथ वर्णन किया है। गीतावली में तो इस प्रसंग के सबसे अधिक पद हैं। ऐसा दृश्य स्त्रियों को सबसे अधिक स्पर्श करनेवाला, उनकी प्रीति, दया और आत्मत्याग को सबसे अधिक उभारनेवाला होता है, यह बात समझकर मार्ग में उन्होंने ग्रामबधुओं का सन्निवेश किया है। ये स्त्रियाँ राम जानकी के अनुपम सौंदर्य पर स्नेहशिथिल हो जाती हैं, उनका वृत्तांत सुनकर राजा की निष्ठुरता पर पछताती हैं; कैकेयी की कुचाल पर भला बुरा कहती हैं। सौंदर्य के साक्षात्कार से थोड़ी देर के लिये उनकी वृत्तियाँ कोमल हो जाती हैं, वे अपने को भूल जाती हैं। यह कोमलता उपकार बुद्धि की जननी है-

सीता लषन सहित रघुराई।
गाँव निकट जब निकसहिं जाई।।
सुनि सब बालबृद्ध नर नारी।
चलहिं तुरत गृह काज बिसारी।।
राम लषण सिय रूप निहारी।
पाइ नयन फल होहिं सुखारी।।
सजल बिलोचन पुलक सरीरा।
सब भए मगन देखि दोउ बीरा।।
रामहिं देखि एक अनुरागे।
चितवत चले जाहि सँग लागे।।
एक देखि बट छाँह भलि,
डासि मृदुल तृन पात।
कहहिं 'गँवाइय छिनुक स्रम,
गवनब अबहिं कि प्रात'।।

राम जानकी के अयोध्या से निकलने का दृश्य वर्णन करने में गोस्वामी जी ने कुछ उठा नहीं रखा। सुशीलता के आगर रामचंद्र प्रसन्नमुख निकलकर दास दासियों को गुरु के सुपुर्द कर रहे हैं, सबसे वही करने की प्रार्थना करते हैं जिससे राजा का दुःख कम हो। भरत जी जब लौटकर अयोध्या आए, तब उन्हें सर सरिताएँ भी श्रीहीन दिखाई पड़ीं, नगर भी भयानक लगा। भरत को यदि रामगमन का संवाद मिल गया होता तो हम इसे भरत के हृदय की छाया कहते। पर घर में जाने के पहले उन्हें कुछ भी वृत्त ज्ञात नहीं था। इससे हम सरसरिता के श्रीहीन होने का अर्थ उनकी निर्जनता, उनका सन्नाटापन लेंगे। लोग रामवियोग में विकल पड़े हैं। सरसरिता में जाकर स्नान करने का उत्साह उन्हें कहाँ? पर यह अर्थ हमारे आपके लिये है। गोस्वामीजी ऐसे भावुक महात्मा के निकट तो राम के वियोग में अयोध्या की भूमि ही विषादमग्न हो रही है; आठ आठ आँसू रो रही है।

चित्रकूट में राम और भरत का जो मिलन हुआ है, वह शील और शील का, स्नेह और स्नेह का, नीति और नीति का मिलन है। इस मिलन से संघटित उत्कर्ष की दिव्य प्रभा देखने योग्य है। यह झाँकी अपूर्व है? 'भायप भगति' से भरे भरत नंगे पाँव राम को मनाने जा रहे हैं। मार्ग में जहाँ सुनते हैं कि यहाँ पर राम लक्ष्मण ने विश्राम किया था, उस स्थल को देख आँखों में आँसू लेते हैं-

राम बास थल बिटप बिलोके।
उर अनुराग रहत नहिं रोके।।

मार्ग में लोगों से पूछते जाते हैं कि राम किस वन में हैं। जो कहता है कि हम उन्हें सकुशल देखे आते हैं, वह उन्हें राम लक्ष्मण के समान ही प्यारा लगता है। प्रिय संबंधी आनंद के अनुभव की आशा देनेवाला एक प्रकार के उस आनंद का जगानेवाला है-'उद्दीपन' है। सब माताओं से पहले राम कैकेयी से प्रेमपूर्वक मिले। क्यों? क्या उसे चिढ़ाने के लिये? कदापि नहीं। कैकेयी से प्रेमपूर्वक मिलने की सबसे अधिक आवश्यकता

थी। अपना महत्व या सहिष्णुता दिखाने के लिये नहीं, उसके परितोष के लिये। अपनी करनी पर कैकेयी को जो ग्लानि थी, वह राम ही के दूर किए हो सकती थी, और किसी के किए नहीं। उन्होंने माताओं से मिलते समय स्पष्ट कहा था-अंब! ईस आधीन जग काहु न देइय दोषु।

कैकेयी को ग्लानि थी, इस प्रकार के संदेह का स्थान गोस्वामीजी ने नहीं रखा। कैकेयी की कठोरता आकस्मिक थी, स्वभावगत नहीं। स्वभावगत भी होती तो भी राम की सरलता और सुशीलता उसे कोमल करने में समर्थ थी।

लखि सिय सहित सरल दोउ भाई।
कुटिल रानि पछितानि अघाई।।
अवनि जमहि जाचति कैकेयी।
महि न बीचु, बिधि मीचु न देई।।

जिस समाज के शील संदर्भ की मनोहारिणी छटा को देख वन के कोल किरात मुग्ध होकर सात्विक वृत्ति में लीन हो गए, उसका प्रभाव उसी समाज में रहने वाली कैकेयी पर कैसे न पड़ता?

भए सब साधु किरात किरातिनि
राम दरस मिटि गई कलुषाई।
कोलकिरात भिल्ल बनवासी।
मधु सुचि सुंदर स्वादु, सुधा-सी।।
भरि भरि परन पुटी रुचि रूरी।
कंद मूल फल अंकुर जूरी।।
सबहिं देहिं करि बिनय प्रनामा।
कहि कहि स्वाद भेद गुननामा।।
देहिं लोग बहु, मोल न लेहीं।
फेरत राम दोहाई देहीं।।

और सबसे पुलकित होकर कहते हैं-

तुम्ह प्रिय पाहुन बन पगु धारे।
सेवा जोगु न भाग हमारे।।
देब काह हम तुम्हहिं गोसाईं।
ईधन पात किरात मिताईं।।
यह हमारि अति बड़ि सेवकाई।
लेहिं न बासन बसन चोराई।।
हम जड़ जीव जीव धन धाती।
कुटिल कुचाली कुमति कुजाती।।
सपनेहुँ धरम बुद्धि कस काऊ।
यह रघुनंदन दरस प्रभाऊ।।

उस पुरुष समाज के प्रभाव से चित्रकूट की रमणीयता में पवित्रता भी मिल गई। उस समाज के भीतर नीति, स्नेह, शील, विनय, त्याग आदि के संघर्ष से जो धर्म ज्योति फूटी उससे आसपास का सारा प्रदेश जगमगा उठा-उसकी मधुर स्मृति से आज भी वहाँ की वनस्थली परम पवित्र है। चित्रकूट की उस सभा की कार्रवाई क्या थी, धर्म के एक-एक अंग की पूर्ण और मनोहर अभिव्यक्ति थी। रामचरितमानस में वह सभा एक आध्यात्मिक घटना है। धर्म के इतने स्वरूपों की एक साथ योजना, हृदय की इतनी उदात्त वृत्तियों की एकसाथ उद्भावना तुलसी के ही विशाल 'मानस' में संभव थी। यह संभावना उस समाज के भीतर बहुत से भिन्न भिन्न वर्गों के समावेश द्वारा संघटित की गई है। राजा और प्रजा, गुरु और शिष्य, भाई और भाई, माता और पुत्र, पिता और पुत्री, श्वसुर और जामातृ, सास और बहू, क्षत्रिय और ब्राह्मण, ब्राह्मण और शूद्र, सभ्य और असभ्य के परस्पर व्यवहारों का उपस्थित प्रसंग के धार्मगांभीर्य और भावोत्कर्ष के कारण, अत्यंत मनोहर रूप प्रस्फुटित हुआ। धर्म के उस स्वरूप को देख सब मोहित हो गए-क्या नागरिक या ग्रामीण और क्या जंगली। भारतीय शिष्टता और सभ्यता का चित्र यदि देखना हो तो इस राज समाज में देखिए। कैसी परिष्कृत भाषा में, कैसी प्रवचन पटुता के साथ, प्रस्ताव उपस्थित होते हैं, किस गंभीरता और शिष्टता के साथ बात का उत्तर दिया जाता है, छोटे-बड़े की मर्यादा का किस सरसता के साथ पालन होता है। सबकी इच्छा है कि राम अयोध्या को लौटें; पर उनके स्थान पर भरत बन को जायँ, यह इच्छा भरत को छोड़ शायद ही किसी और के मन

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

(शेष पृष्ठ ३ पर...)

विनय पीयूष

दिशा-दिशा में जो मिलता !

यस्येमे हिमवंता महित्वा यस्य समुद्रꣳ रसया सहाहुः।
यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम।।
(यजु० 25/12)

जिसकी महिमा से होते
हिमवंत उजागर,
जिसका स्नेह-संग पाकर
कहलाते सागर,
दिशा-दिशा में जो मिलता
बाँहें फैलाकर,
सुख-स्वरूप उस प्रभु को
अपना हवि दें हम !

काव्यानुवाद : अमृत खरे

सम्पादकीय

श्वेत वस्त्रों में एक साधु

परहित चिन्तन में निरत व्यक्ति जब 'स्व' की परिधि का अतिक्रमण करके विराटत्व को प्राप्त करता है; तो वह 'साधु' की श्रेणी में आ जाता है, भले ही वह गैरिक वस्त्रों में न हो। शुभ्र खादी वस्त्रों में आवेष्ठित, सफेद दाढ़ी से समलंकृत श्री ओजोमित्र शास्त्री विद्यावारिधि भी ऐसे ही साधु थे। शास्त्री जी की साधुता एवं मानवीय संवेदनशीलता से ओतप्रोत अनेक साक्ष्य मेरी स्मृति पटल पर इन पंक्तियों को लिखते समय उभर रहे हैं; जिनमें से कुछ की चर्चा यहाँ अभीष्ट है।

६ मार्च, २०१६ रविवार को सायंकाल जब शास्त्री जी ने कमता, लखनऊ में इहलोक लीला को संवरण किया तो उनके देहावासान की दु:खद सूचना मुझे श्री अखिलमित्र तथा पालप्रवीण ने तो दी ही, श्री सत्यप्रकाश आर्य (बाराबंकी) ने भर्राये कंठ से कहा- 'डाक्टर साहब पिताजी नहीं रहे!'- ओजोमित्र शास्त्री के तीन पुत्रों विश्वमित्र, अखिलमित्र और सर्वमित्र को तो सभी जानते हैं किन्तु उनके चतुर्थ पुत्र के रूप में सत्य प्रकाश जी को कम लोग जानते होंगे। अत: यह जानना अत्यधिक महत्वपूर्ण है कि जहाँ शास्त्री जी अपने तीन पुत्रों के जन्मदाता थे किन्तु वे सत्य प्रकाश जी के जन्म दाता न होकर निर्माता थे। एक आश्रय की खोज में भटक रहे बालक को शास्त्री जी ने आश्रय दिया और उसे शिक्षक, आचार्य, पुरोहित, भजनोपदेशक बना दिया तथा कविकुल गुरू कालिदास की राजा दिलीप के सम्बन्ध में कही गई उक्ति को चरितार्थ कर दिया- 'स पिता, पितरस्तासां केवलं जन्महेतव:।'

सन् १९५७-५८ में जब मैंने भाई जी (देवीप्रसाद आर्य, आर्य समाज डालीगंज, लखनऊ) के साथ आर्य समाज अलीगंज, डंडहिया बाजार को देखा तो वहाँ एक जीर्ण शीर्ण कक्ष था- वहीं ओजोमित्र जी से परिचय हुआ था। उसके पश्चात् (१९६१ से १९७७) आजमगढ़ के कार्यकाल के उपरान्त जब १९८० के आसपास पुन: उसी आर्य समाज मंदिर के स्थान को देखा तो वहाँ भव्य मंदिर के दर्शन हुए। 'आर्य समाज मन्दिर' का सुनहरा बोर्ड, ओम् की पताकाएँ, सुन्दर द्वार, प्रवेश करते ही भव्य यज्ञशाला, दीवारों पर शुद्ध वेदमंत्र तथा संस्कृत सूक्तियाँ- एक भी मात्रा या वर्ण की त्रुटि नहीं। कई कक्ष निर्मित हो चुके थे- संस्कार कराने हेतु हर वक्त पुरोहित की उपस्थिति थी। जीर्ण शीर्ण स्थल दो दशक में एक भव्य मंदिर का स्वरूप ले चुका था- यह था- तपोनिष्ठ स्वामी त्यागानन्द जी के शिष्य ओजोमित्र शास्त्री के व्यक्तित्व और पुरुषार्थ का चमत्कार!

एक रोचक प्रसंग यह है कि 'आर्य लोक वार्ता' ही अब आर्य जगत का एकमात्र पत्र है, जिसमें 'आर्य्य' शब्द में डबल 'य' का प्रयोग होता है। प्रारंभ में कई जगह से संदेश आये कि 'आर्य्य' शब्द अशुद्ध लिखा जा रहा है। उस समय श्री ओजोमित्र शास्त्री ने 'अष्टाध्यायी' का सूत्र उद्धृत करते हुए लिखा- 'आर्य' शब्द को 'आर्य्य' लिखना सर्वथा शुद्ध और वैदिक है। यहाँ तक सत्यार्थ प्रकाश और ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका इत्यादि ग्रंथों में अपनी लेखनी से महर्षि ने 'आर्य्य' शब्द ही अंकित किया है और इस शब्द की गौरव गरिमा की ओर सबका ध्यान आकर्षित किया है। भले ही अनेक पत्र और आर्य जगत के लोग इस तथ्य को भूल गये हैं किन्तु 'आर्य्य लोक वार्ता' अपने वैशिष्ट्य आज भी बनाये हुए है। १९५० के आसपास 'आर्य मित्र' के मुखपृष्ठ पर 'आर्य्य मित्र' ही छपता था और घासमंडी सीतापुर आर्य समाज मंदिर के बाहर मोटे शब्दों में 'आर्य्य समाज मंदिर' ही लिखा था।

आर्य लोक वार्ता प्रकाशन के प्रारंभिक दौर का एक संस्मरण और भी उल्लेख्य है। जिन दिनों १९९८-९९ में मैं भैंसाकुण्ड शवदाह स्थल का नवीनीकरण शुरू हुआ तो पहले से बने हुए आर्य समाज पद्धति (संस्कार विधि) के शवदाह कुण्ड के नष्ट होने की आशंका उत्पन्न हुई। ओजोमित्र जी ने इस ओर तत्कालीन महापौर डॉ.एस.सी.राय का ध्यान आकृष्ट किया और 'आर्य लोक वार्ता' ने शास्त्री जी के वक्तव्य के हवाले से इस मामले को आगे बढ़ाया। डा. एस.सी.राय ने आश्वासन ही नहीं दिया वरन् ओजोमित्र के निर्देशानुसार वैदिक दाह कुण्ड को सुरक्षित रखा। आज भी भैंसाकुण्ड में सबसे पहला वही 'वैदिक दाहकुण्ड' स्थित है।

ओजोमित्र शास्त्री जी की मानवीय संवेदनाओं के उच्च धरातल का अन्य उदाहरण देखिए। कई वर्ष पूर्व संस्कृत मनीषी डॉ.वीरभद्र मिश्र के असामयिक निधन से उनका संस्कृतभाषी परिवार निराश्रित, क्षुब्ध और हताश था। शास्त्री जी ने इस परिवार की हर संभव सहायता की। आर्य समाज अलीगंज के वार्षिकोत्सव पर अंतिम दिन संस्कृत सम्मेलन में संस्कृत विदुषी स्व.डा.वीरभद्र मिश्र की पत्नी डा.अनीता मिश्र तथा उनकी पुत्री संस्कृता एवं पुत्र सुविज्ञ को सम्मानित किया गया। आज परमात्मा की कृपा से तथा स्व.शास्त्री जी के आशीर्वाद से संस्कृता एवं सुविज्ञ पी.सी.एस.संवर्ग में स्थान पा चुके हैं और अच्छी स्थिति में हैं।

हममें से आर्य समाज के कई सदस्य, विद्वान्, पुरोहित, आचार्य वैदिक और पौराणिक दोनों तरह के संस्कार करने कराने में ख्याति और अर्थ अर्जित कर लेते हैं। एक शायर के शब्दों में-

रिन्द के रिन्द रहे, हाथ से
जन्नत न गई।

किन्तु ओजोमित्र शास्त्री इसके अपवाद थे। वे वैदिक मार्ग पर निरन्तर चलते रहे और 'नान्या पंथा: विद्यतेऽनाय' की सूक्ति को चरितार्थ करते रहे। उनके श्वेत वस्त्रों में कोई अवैदिक कार्यकलापों का धब्बा नहीं लगा-

ज्यों की त्यों धरि दीनी चदरिया।

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१६६

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में अष्टम समुल्लास का अंश

तीन अनादि

अजामेकां लोहितशुक्लकृष्णां बह्वी: प्रजा: सृजमानां स्वरूपा:। अजो ह्येको जुषमाणोऽनुशेते जहात्येनां भुक्तभोगामजोऽन्य:।।

यह उपनिषद् का वचन है-प्रकृति, जीव और परमात्मा तीनों अज अर्थात् जिनका जन्म कभी नहीं होता और न कभी ये जन्म लेते अर्थात् ये तीन सब जगत् के कारण हैं। इनका कारण कोई नहीं। इस अनादि प्रकृति का भोग अनादि जीव करता हुआ फंसता है और उसमें परमात्मा न फंसता और न उसका भोग करता है। ईश्वर और जीव का लक्षण ईश्वर विषय में कह आये। अब प्रकृति का लक्षण लिखते हैं-

सत्त्वरजस्तमसां साम्यावस्था प्रकृति: प्रकृतेर्महान् महतोऽहंकारोऽहंकारात् पंचतन्मात्राण्युभयमिन्द्रियं पंचतन्मात्रेभ्य: स्थूलभतानि पुरुष इति पंचविंशतिर्गण:।। (सांख्य सूत्र)

(सत्त्व) शुद्ध (रज:) मध्य (तम:) जाड्य अर्थात् जड़ता तीन वस्तु मिलकर जो एक संघात है उस का नाम प्रकृति है। उससे महत्तत्त्व बुद्धि, उससे अहंकार, उससे पांच तन्मात्रा सूक्ष्म भूत और दश इन्द्रियां तथा ग्यारवां मन, पांच तन्मात्राओं से पृथिव्यादि पांच भूत ये चौबीस और पच्चीसवां पुरुष अर्थात् जीव और परमेश्वर हैं। इनमें से प्रकृति अविकारिणी और महत्तत्त्व अहंकार तथा पांच सूक्ष्म भूत प्रकृति का कार्य्य और इन्द्रियां मन तथा स्थूलभूतों का कारण हैं। पुरुष न

किसी की प्रकृति उपादान कारण और न किसी का कार्य्य है।

(प्रश्न)-सदेव सोम्येदमग्र आसीत्।।1।। असद्वा इदमग्र आसीत्।।2।। आत्मा वा इदमग्र आसीत्।।3।। ब्रह्म वा इदमग्र आसीत्।।4।।

ये उपनिषदों के वचन हैं-हे श्वेतकेतो यह जगत् सृष्टि के पूर्व सत्।1। असत्।2। आत्मा।3। और ब्रह्मरूप था।4।। पश्चात्

तदैक्षत बहु: स्यां प्रजायेयेति।।1।।
सोऽकामयत बहु: स्यां प्रजायेयेति।।2।।
सर्व खल्विदं ब्रह्म नेह नानास्ति किंचन।।

यह भी उपनिषद् का वचन है- जो यह जगत् वह सब निश्चय करके ब्रह्म है। उसमें दूसरे नाना प्रकार के पदार्थ कुछ भी नहीं किन्तु सब ब्रह्मरूप है।

(उत्तर) क्यों इन वचनों का अनर्थ करते हो? क्योंकि उन्हीं उपनिषदों में-

अन्नेन सोम्य शुंगेनापो मूलमन्विच्छ अद्भिरसोम्य शुंगेन तेजोमूलमन्विच्छ तेजसा सोम्य शुंगेन सन्मूलमन्विच्छ सन्मूला: सोम्येमा: प्रजा: सदायतना: सत्प्रतिष्ठा:।। छान्दोग्य उपनि.।।

हे श्वतेकेतो! अन्नरूप पृथिवी कार्य्य से जलरूप मूल कारण को तू जान। कार्यरूप जल से तेजोरूप मूल और तेजोरूप कार्य से सद्रूप कारण जो नित्य प्रकृति है उस को जान। यही सत्य स्वरूप प्रकृति सब जगत् का मूल घर और स्थिति का स्थान है। यह सब जगत् सृष्टि के पूर्व असत् के सदृश और जीवात्मा, ब्रह्म और प्रकृति में लीन होकर वर्त्तमान था; अभाव न था और जो (सर्व खलु) यह वचन ऐसा है जैसा कि 'कहीं की ईंट का रोड़ा भानमती ने कुइवाँ जोड़ा' ऐसी लीला का है। क्योंकि-

सर्व खल्विदं ब्रह्म तज्जलानिति शान्त उपासीत।
छान्दोग्य और-
नेह नानास्ति किंचन।।

(क्रमश:)

वेद प्रवचन

सफल जीवन और उषा

❑पं.शिव कुमार शास्त्री, भू.पू.संसद सदस्य

महे नो अद्य बोधयोषो राये दिवित्मती। यथा चिन्नो अबोधय: सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते।। (साम0 421)

शब्दार्थ-

(**सत्यश्रवसि**) ठीक-ठीक श्रवण करने वाली (**सुजाते**) शोभा-सम्पन्न जन्म से युक्त (**अश्वसूनृते**) श्रुति-मधुर शब्दों से भरपूर (**वाय्ये**) विस्तृत (**उष:**) प्रभात-वेला (**यथाचित्**) जिस प्रकार (**न:**) हमको (**अबोधय:**) पहले के समान जगाने वाली (**अद्य**) अब भी (**दिवित्मती**) प्रकाश वाली तू (**महेराये**) महान् धन-धान्यादि ऐश्वर्य के लिए (**न:**) हमको (**बोधय**) जगा!

व्याख्या-

इस मंत्र में उष:काल का बहुत ही चमत्कारपूर्ण प्राकृतिक सौन्दर्य और प्रभाव का वर्णन किया गया है। दूसरे क्रम पर ब्राह्ममुहूर्त्त में जागकर आवश्यक कार्यों से निवृत्त होना सफलता और स्वास्थ्य दोनों दृष्टियों से ही उत्तम है। तीसरे, देवियाँ उष:-समय के गुणों को धारण कर घरों को सुखमय तथा शोभायुक्त बना सकती हैं।

मंत्र में उष: के तीन महत्वपूर्ण विशेषण हैं, जो उसके उत्कर्ष पर प्रभाव डालते हैं। पहला है '**सत्यश्रवसि**'-ठीक-ठीक श्रवण करनेवाली। इसका एक भाव यह है कि प्रात: के समय शब्द दूरगामी तथा स्पष्ट सुनाई देनेवाला होता है। दूसरा इसका भाव यह भी है कि इस समय सुना हुआ शब्द भले प्रकार मनन किया जाता है। शब्द-प्रयोग का लक्ष्य भी मनन शक्ति को उद्बुद्ध करने का ही होता है। यदि उच्चरित शब्द विचारशक्ति को प्रभावित नहीं करते तो उनका उच्चारण और श्रवण दोनों निरर्थक हैं। इसके अतिरिक्त प्रात: स्मरण किया पाठ, शीघ्र स्मृति पटल पर अंकित हो जाता है और शीघ्र विस्मृत नहीं होता, अत: उष: श्रवण, मनन और स्मरण के लिए सर्वोत्तम समय है।

दूसरा विशेषण है-'**सुजाते**-शोभन सुन्दर जन्मवाली। उष:काल का समय प्रकृति में शोभा और सौन्दर्य को भर देता है। जिस ओर दृष्टि डालिये, इस समय का मनोहर दृश्य नयनाभिराम होता है। स्वर्णिम प्राची संसार की प्रत्येक वस्तु को सुनहरा बना रही है। बहते हुए नदी के प्रवाह में उसकी शोभा कुछ और ही प्रकार की होती है। वनस्थली की दूर्वा पर झिलमिलाते ओसकण अपना अनोखा सौन्दर्य बिखेर रहे होते हैं। इस शोभा को देखकर ही किसी शायर ने लिखा था-

उफ़् री शबनम! इस क़दर नादानियाँ?
मोतियों को घास पर फैला दिया?

इस समय न केवल ओस-कण दूब पर मोती-से झिलमिलाते हैं, अपितु रात को वृक्षों ओर वनस्पतियों पर पड़ी हुई ओस बूँद-बूँद करके टपकने लगती है। उधर फूल भी खिलने लगते हैं। इस दृश्य का भी किसी शायर का मनोरम शब्दचित्र देखिये-

दूसरों के दर्द का अहसास होता है किसे!
हँस दिया करते हैं गुल शबनम को रोता देखकर।।

अस्वस्थ-से-अस्वस्थ व्यक्ति का भी इस वेला में रोग का प्रकोप कम हो जाता है। मन में कुछ उत्साह संचारित हो जाता है। इस प्रकार विचारने पर यह '**सुजाता** विशेषण बहुत स-सार और सार्थक है। इसके आगे तीसरा विशेषण है '**अश्वसूनृते**-श्रुतिमधुर शब्दों से भरपूर। यह विशेषण भी कमाल का है। इस समय नाना प्राकर के पक्षी मस्त होकर गाते हैं। कुक्कुट की उदात्त, अनुदात्त और प्लुत से युक्त तीव्र ध्वनि, कोयल की अमृतवर्षिणी स्वरलहरी, केवला ब्राह्म मुहूर्त में बोलनेवाली एक विशेष चिड़िया की कानों को मीठी लगने वाली, ध्वनि, पौ फटने पर एक-साथ चहचहाने वाले पक्षियों का कलरव और न जाने कितने प्रकार की ध्वनियाँ सारे वायुमण्डल को संगीतमय बना देती हैं। इसीलिए वेद में उष: को '**अश्वसूनृते**' कहकर इन विशेषणों से इस काल की भिन्न-भिन्न प्राकृतिक सुन्दरताओं का वर्णन किया।

मन्त्र में दूसरी बात है मनुष्य का निद्रा-तन्द्रा त्यागकर अपनी दिनचर्या इसी उत्तम समय से प्रारम्भ करनी चाहिए इसलिए महर्षि मनु ने विधान किया-'**ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्येत, धमार्थौ चानुचिन्तयेत्**'-'ब्राह्म मुहूर्त में जागे और प्रथम आध्यात्मिक उन्नति के लिए विचारे और फिर सांसारिक कारोबार के विषय में सोचे।' इस समय के शान्त वातावरण और स्वस्थचित्त से मनुष्य जितना अच्छा सोच सकता है, उतना दूसरे समय में नहीं।

मंत्र की तीसरी बात घरेलू तौर पर सामाजिक जीवन के लिए अत्यन्त महत्व पूर्ण है कि देवियाँ अपने जीवन में उष: के गुणों को धारण करके सारे वायुमण्डल को सुरभित, शान्त और मधुमय बना दें। देवियों में उष: का पहला गुण '**सत्य श्रवसि**' होना चाहिए। भाष्यकारों ने सत्य श्रवसि का एक अर्थ 'आनन्द से युक्त गृहस्थाश्रम' भी किया है। कौन-सा गृहस्थ आनन्दधाम होगा? जहाँ देवियाँ ऋत, हित और मित गुण से युक्त वाणी का प्रयोग करें। वाणी से सत्य कभी ओझल न हो। भर्तृहरि ने गृहस्थाश्रम की विशेषता का वर्णन करते हुए लिखा है कि-'**सानन्दं सदनं सुतास्तु सुधिय:, कान्ता प्रियालापिनी**'-सदन को सानन्द बनाने में '**कान्ता प्रियालापिनी**'-मधुरभाषिणी पत्नी का बहुत बड़ा महत्व है, किन्तु वह मधुरभाषण ऋत और सत्य से युक्त होना चाहिए। बातें मीठी-मीठी भी यदि किसी को बहकानेवाली हों तो किस काम की?

(श्रुति सौरभ से साभार)

दयानन्द चरितम्

-आचार्य दीपंकर, मेरठ

छन्द-८६

कियददुर्भाग्यं नोऽदिशदिह भुवं संस्कृतिमयं
सदाचारं देशो विगलितगतिः सोऽद्य दलितः।
परिभ्रष्टान् मार्गात् त्वमतिकरुणया स्मारयसि नः
परातीतं भव्यं गमयसि नवं चोज्वलपथम्।।

कितना दुर्भाग्य है हमारा
जिस देश ने पूरी धरती को
संस्कृति और सदाचार दिये थे,
वही भारत देश
अब गतिहीन और पददलित है !
हे संन्यासी !
अपने मार्ग से भटके हुए
भारतीयों को तुम
बड़ी करुणा के साथ
शानदार अतीत की याद दिलाकर
उज्ज्वल भविष्य की ओर
चलाते हो।

('दयानन्द चरितम्' से साभार, क्रमशः)

आनन्द की लहर जगाता है
नव संवत्सर

❑राजेश कुमार शर्मा 'आग्नेय'

भारतीय संस्कृति के अनुसार चैत्र शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा (पहली तिथि) से अर्थात् ८ अप्रैल २०१६ से नव वर्ष प्रारम्भ हो रहा है। यह नव वर्ष किसी न किसी रूप से भारत के अलग-अलग राज्यों, क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न मान्यताओं के अनुसार मनाया जाता है। पूरे उत्तर भारत मे इसी दिन से माँ दुर्गा की नौ दिनों के लिए पूजा प्रारम्भ की जाती है। जम्मू कश्मीर में नवरेह, पंजाब में वैशाखी, महाराष्ट्र में गुडी-पडवा, सिंधी परिवार में चेट्टी-चंद, केरल में विशु, असम में रोंगली विहु, आंध्र में यह पर्व उगादि के नाम से जाना जाता है। उग्रादि (युगादि) का अर्थ होता है मानवी सृष्टि रचना का प्रथम दिन। विदेशों में भी जहां भारतीय रहते हैं वहां वह नव संवत्सर मनाते हैं। ईरान देश में इसी तिथि से 'नौरोज' अर्थात् नववर्ष मनाया जाता है।

भारतीय आदिकाल से सृष्टि संवत्सर मनाते आये हैं। ग्रन्थों के आधार पर सृष्टि का प्रारम्भ इसी दिन हुआ था, साथ ही सूर्य के उदय के साथ ही काल की गणना प्रारम्भ हुई। भारत कृषि प्रधान देश होने के कारण इस पर्व का विशेष महत्व है, खेतों से पका अन्न घरों में आता है, आर्थिक सम्पन्नता में वृद्धि होती है चैत्र मास, वसंत ऋत में आनन्द आता है। वसन्त का प्रभाव मनुष्यों, पेड़ पौधों, पशु-पक्षियों पर भी स्पष्ट देखा जाता है। सम्पूर्ण भारत में सुन्दर छटा बिखर जाती है। विचार कीजिये अंग्रेजी नव वर्ष एक जनवरी को जाड़े के अलावा और कुछ नहीं लगता जबकि नव संवत्सर हमारे मन में आनन्द की लहर जगाता है। नव संवत्सर के महीनों के नाम आकाशीय नक्षत्रों के उदय और अस्त होने के आधार पर रखे गये हैं तथा तिथियां चन्द्रमा और सूर्य की गति पर आधारित होती हैं। इस प्रकार यह संवत वैज्ञानिक वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित है।

न्यायप्रिय, पराक्रमी, देशभक्त, विक्रमादित्य ने शकों को हराया था, अपना राज्य स्थापित किया और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन ही राज तिलक हुआ तथा इसी दिन राजा विक्रमादित्य ने अपने राज्य के सभी कर्जदारों, किसानों, मजदूरों, गरीबों के कर्ज माफ कर दिये, इसी दिन इनका राज तिलक हुआ और यह नव संवत्सर-विक्रम संवत के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

देश का वित्तीय वर्ष, व्यापारियों का खाता, एक अप्रैल अर्थात् नव संवत्सर गणना वर्ष के आस पास ही होता है। आइये अपनी भारतीयता व संस्कृति को बिना किसी भेदभाव के पुनः जागृत करने के लिए चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नव वर्ष मनायें। शिक्षा संस्थानों में, अनेक समितियों एवं सामाजिक स्तर पर अपने सामर्थ्यानुसार परिचर्चा, कवि सम्मेलन, गोष्ठियां पार्कों में मधुर मिलन, खेलकूद व उत्साहवर्द्धक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन पूर्ण लगन व उत्साहपूर्व करना चाहिए, युवा अपने मोबाइल द्वारा नव वर्ष की बधाई प्रेषित करें तथा व्यक्तिगत रूप से नव वर्ष की बधाइयों का आदान प्रदान कर नये साल का स्वागत करें।

नव संवत्सर २०७३ आप के सम्पूर्ण जीवन को विद्या, शिक्षा व उत्तम संस्कारों से सुशोभित करें, आपको प्रभु स्वस्थ, धनवान, वैभवशाली, ऐश्वर्यवान व सफल बनाये, आपको सुख शान्ति व आनन्द की लहर प्रदान हों।

-राजेश प्रकाश शर्मा, १८ब, अवधपुरी, सर्वोदय नगर, लखनऊ-१६

(पृष्ठ 1 का शेष.....)

मन की....

में हो। अपनी प्रबल इच्छाओं के लिए हम लोग सभाओं में बैठते हैं; पर वहाँ बैठते ही धर्म के स्थिर और गंभीर स्वरूप के सामने उनकी व्यक्तिगत इच्छाओं का कहीं पता नहीं रह जाता। राजा के सत्यपालन से जो गौरव राजा और प्रजा दोनों को प्राप्त होता दिखाई दे रहा है, उसे खंडित देखना वे नहीं चाहते। जनक, वशिष्ठ, विश्वामित्र आदि धर्मतत्व के पारदर्शी जो कुछ निश्चय कर दें, उसे वे कलेजे पर पत्थर रखकर मानने को तैयार हो जाते हैं।

कवि की पूर्ण भावुकता इसमें है कि वह प्रत्येक मानवस्थिति में अपने को डालकर उसके अनुरूप भाव का अनुभव करे। इस शक्ति की परीक्षा का रामचरित से बढ़कर विस्तृत क्षेत्र और कहाँ मिल सकता है! जीवनस्थिति के इतने भेद और कहाँ दिखाई पड़ते हैं! इस क्षेत्र में जो कवि सर्वत्र पूरा उतरता दिखाई पड़ता है, उसकी भावुकता को और कोई नहीं पहुँच सकता। जो केवल दांपत्य रति में ही अपनी भावुकता प्रकट कर सकें, या वीरोत्साह ही अच्छा चित्रण कर सकें, वे पूर्ण भावुक नहीं कहे जा सकते। पूर्ण भावुक वे ही हैं जो जीवन की प्रत्येक स्थिति के ममस्पर्शी अंश का साक्षात्कार कर सकें और उसे श्रोता या पाठक के सम्मुख अपनी शब्द शक्ति द्वारा प्रदर्शित कर सकें। हिंदी के कवियों में इस प्रकार की सर्वांगपूर्ण भावुकता हमारे गोस्वामी जी में ही है जिसके प्रभाव से रामचरित मानस उत्तरीय भारत की सारी जनता के गले का हार हो रहा है। वात्सल्य भाव का अनुभव करके पाठक तुरंत बालक राम लक्ष्मण के प्रवास का उत्साह पूर्ण जीवन देखते हैं जिसके भीतर आत्मावलंबन का विकास होता है। फिर आचार्य विषयक रति का स्वरूप देखते हुए वे जनकपुर में जाकर सीताराम के परम पवित्र दांपत्य भाव के दर्शन करते हैं। इसके उपरान्त अयोध्या के त्याग के कारुण दृश्य के भीतर भाग्य की अस्थिरता का कटु स्वरूप सामने आता है। तदनंतर पथिक वेशधारी राम जानकी के साथ साथ चलकर पाठक ग्रामीण स्त्री पुरुषों के उस विशुद्ध सात्विक प्रेम का अनुभव करते हैं जिसे हम दांपत्य, वात्सल्य आदि कोई विशेषण नहीं दे सकते, पर जो मनुष्यमात्र में स्वाभाविक है।

रमणीय वन पर्वत के बीच एक सुकुमारी राजवधू को साथ लिए दो वीर आत्मावलंबी राजकुमारों को विपत्ति के दिनों को सुख के दिनों में परिवर्तित करते पाकर वे 'वीरभोग्या वसुंधरा' की सत्यता हृदयंगम करते हैं। सीताहरण पर विप्रलंभ शृंगार का माधुर्य देखकर पाठक फिर लंका दहन के अद्भुत, भयानक और वीभत्स दृश्य का निरीक्षण करते हुए राम रावण युद्ध के रौद्र और युद्धवीर तक पहुँचते हैं। शांतरस का पुट तो बीच बीच में बराबर मिलता ही है। हास्यरस का पूर्ण समावेश राम चरितमानस के भीतर न करके नारद मोह के प्रसंग में उन्होंने किया है। इस प्रकार काव्य के गूढ़ और उच्च उद्देश्य को समझने वाले, मानव जीवन के सुख और दुःख दोनों पक्षों के नाना रूपों के ममस्पर्शी चित्रण को देखकर, गोस्वामीजी के महत्व पर मुग्ध होते हैं; और स्थूल बहिरंग दृष्टि रखने वाले भी, लक्षण ग्रंथों में गिनाए हुए नव रसों और अलंकारों पर, अपना आह्लाद प्रकट करते हैं। *('गोस्वामी तुलसीदास' से साभार)*

डॉ.वेद प्रकाश आर्य के जन्मदिवस पर विशेष

अमृत पुत्रों! सुनो : एक अध्ययन

❑डॉ.गमप्रबल मिश्र

[यह एक सुखद संयोग ही है कि श्रीरामनवमी - डॉ.वेद प्रकाश आर्य (प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता) का जन्मदिवस भी है। इस अवसर पर हम डॉ.आर्य की प्रसिद्धि पुस्तक 'अमृत पुत्रो, सुनो' के सम्बन्ध में प्रख्यात चिन्तक डॉ.राम प्रबल मिश्र, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, ग्रामोदय आश्रम स्नातकोत्तर महाविलय, वीरसिंह पुर, सरैया, सया-अम्बेडकरनगर (उ.प्र.) का शोध समीक्षापरक लेख प्रकाशित कर रहे हैं। डॉ.(श्रीमती) कमलेश पाण्डेय के सौजन्य से 'ग्रामर्षिका' शोध पत्रिका, अंक-जून २०१६ से साभार]

डॉ.रामप्रबल मिश्र

अमृत पुत्रों! सुनो यह संबोधन भारतीय संस्कृति के उन्नायक, धर्म के प्राणस्वरूप, भारत के गौरव को विश्व में स्थापित करने वाले, गैरिक वस्त्रधारी युवा संन्यासी, प्रातःस्मरणीय स्वामी विवेकानन्द ने अमेरिका के शिकागो महानगर में आयोजित विश्वधर्म सम्मेलन में उपस्थित श्रोताओं को सुनाकर मंत्र मुग्ध सा कर दिया था। वातावरण में सर्वत्र सन्नाटा छा गया था। महर्षि दयानन्द ने वेदमंत्र की व्याख्या करते हुए मनुष्यों को अमृतपुत्रों का संबोधन दिया है-

युजे वा ब्रह्म पूर्व्यं नमोभिर्विश्लोकऽएतुपथ्येवसूरेः।
शृण्वन्तु विश्वेऽअमृतस्य पुत्राऽआये धामानि दिव्यानि तस्थुः।

अमृत पुत्रों! सुनो, आर्य लोक वार्ता प्रकाशन से प्रकाशित हिन्दी साहित्य के प्रकाण्ड विद्वान्, चिन्तक, अन्वेषक एवं भारतीय संस्कृति के अमरगायक डॉ.वेद प्रकाश आर्य द्वारा प्रणीत पुस्तक का नाम है। डॉ.आर्य जी कुशल वक्ता हैं, इसलिए अपनी बात को संयमित, बोधगम्य सरल एवं माधुर्यपूर्ण भाषा में व्यक्त करने में पूर्णरूप से समर्थ हैं। डॉ.आर्य जी की पुस्तक अमृत पुत्रों! सुनो, रत्नों से पूरित सागर के समान है। इसका मूल्यांकन मेरे जैसे अल्पज्ञ के लिए सर्वथा असम्भव है, तथापि लोभवश कुछ प्रयास कर रहा हूँ-

सो मो सन कहि जात न कैसे। साक बनिक मनि गन गुन जैसे।।

भारतीय संस्कृति के अनुसार सत्य का लोप हो जाने से देश के पतन का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है-सत्योपदेश से बढ़कर राष्ट्रोन्नति का दूसरा मार्ग नहीं है।...दृढ़ता और विश्वासपूर्वक सत्य का प्रचार-प्रसार करना मानवता की बहुत बड़ी सेवा हो जाती है। आर्य लोक वार्ता का प्रकाशन इसी सत्य की साधना को समर्पित है।

आर्य लोक वार्ता के माध्यम से हम भारतीय संस्कृति के अमरता के दिव्य संदेश से देशवासियों को जोड़ना चाहते हैं। महाकवि जयशंकर प्रसार का संकेत इसी ओर है-

डरो मत अरे, अमृत संतान! अग्रसर है मंगलमय बुद्धि।
पूर्ण आकर्षण जीवन केन्द्र, खिंची आयेगी, समल समृद्धि।।

भगवत्कृपा प्राप्त करने के लिए एकमात्र उपासना ही उच्चकोटि का सुलभ साधन है। इस सम्बन्ध में डॉ.आर्य का विचार द्रष्टव्य है- आमतौर से ईश्वर की भक्ति (उपासना) के लिए सहमत हो जाते हैं, किन्तु उनके सामने दो विवशताएँ अवरोध बनकर खड़ी हो जाती हैं- पहली रुकावट है- मन का नहीं लगता और दूसरी रुकावट है-समय नहीं मिलता।

दोनों प्रश्नों का समाधान भी पुस्तक में लिखा है- हमें मन को नियंत्रण में रखने के उपाय खोजना चाहिए तभी हमारी शक्ति में वृद्धि सम्भव है। मन बन्धन में डालने वाला है और बंधन से मुक्ति दिलाने वाला भी है- 'मन एवं मनुष्याणां कारण बन्ध मोक्षयोः।' मन की एकाग्रता एवं नियंत्रण का प्रमुख साधन है- उपासना में प्राणायाम का विधान।

दूसरी रुकावट- समय न मिलने की है- के संबन्ध में डॉ.आर्य जी ने लिखा है-आज के आदमी के पास आत्मचिंतन का, हृदय की बात सुनने का, मन की सही ध्वनि एवं स्पंदनों को सुनने का एवं समझने का समय ही नहीं है। यदि यही स्थिति रही तो आज की यांत्रिक जिन्दगी आदमी की मननशीलता को समाप्त करके उसे एक यंत्र (मशीन) बनाकर छोड़ेगी। समय नहीं है तो समय निकालना होगा, उसे व्यस्त जिन्दगी की मजबूत पकड़ से छीनना होगा। अध्यात्म वेत्ता ईश्वर से मिलने के लिए संध्या का विधान करते हैं। संध्या से लाभ होता है- संध्या करें तो उनमें सद्भाव, सदाशयता, एकता तथा प्रेम की भावनाओं का निश्चय ही संचार होगा तथा प्रदूषण की तीव्रगति पर विराम लग जायेगा। संध्या एक साधना है, एक तप है। यह एक ऐसा तप है जिसे द्वारा दैहिक, दैविक और भौतिक तीनों प्रकार के तापों का प्रशमन सम्भव है। तप से ही ताप का निवारण हो सकता है।

'शिवरात्रि का मूल संदेश' नामक शीर्षक में डॉ.आर्य ने एक संदेश प्रस्तुत किया है- यह शिवरात्रि मूलशंकर के जीवन-बोध की रात्रि बनकर आयी थी। यही मूलशंकर आगे चलकर दयानन्द सरस्वती के नाम से विख्यात हुए।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने लिखा है- 'परमात्मा ही शिव है, आनन्द है, मंगल है और कल्याण का अधिष्ठाता है। वह सत्, चित् एवं आनन्दस्वरूप है। वह एक है और सम्पूर्ण जगत् का स्वामी है। संसार के समस्त प्राणी उसी की संतान हैं।' तभी तो मनीषियों ने कहा है-'वसुधैव कुटुम्बकम्'। हम सभी अमृत पुत्र हैं। 'छोटी सी वसीयत बड़ा आश्वासन' शीर्षक में दयानन्द के साहित्यिक ग्रन्थों का परिचय दिया गया है-(१) सत्यार्थ प्रकाश (२) ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका (३) संस्कार विधि।

'स्वर्ग कहाँ?' नामक शीर्षक में डॉ.आर्य जी ने स्वर्ग और नरक के सम्बन्ध में शास्त्रों से प्रमाणित तथ्यों के साथ सामयिक चर्चाओं का भी उल्लेख किया है। यथा-स्वर्ग के सुख और नरक के दुःख अपरिमित हैं। जन्नत के बाग और जहन्नुम की आग-अपने प्रलोभन और आतंक के लिए मशहूर हैं। जिस घर में धन की नित्यप्राप्ति, आरोग्य, सच्चा प्रेम करने वाली मृदुभाषिणी पत्नी, आज्ञा पालक पुत्र और अर्थोपार्जन में सहायक विद्या हो, वहीं स्वर्ग और जहाँ गृहकलह की आग धधक रही हो वही नरक है। (सम्पादित अंश)

शुभाकांक्षा

होलिकोत्सव के अवसर पर अनेक रंगों में रंगा 'आर्य लोक वार्ता' का मार्च अंक नयनाभिराम लगा। विगत अंकों की भांति इस बार भी पुरातन साहित्यकारों को सम्मान पूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। मुख्य पृष्ठ पर महर्षि दयानन्द सरस्वती पर आचार्य विष्णु प्रभाकर जी का लेख और काव्यायन में स्व.सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता 'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी'-इसके प्रमाण हैं। काव्यायन में गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' के 'समसामयिक दोहे', महेश चन्द्र द्विवेदी की रचना आरक्षण ब्लैकहोल और डॉ.मिर्जा हसन नासिर की गजल में समसामयिक तथ्य उजागर हुए हैं। सम्पादकीय में संजय भंसाली की फिल्म 'बाजीराव मस्तानी' और के आसिफ की 'मुगले आज़म' की समीक्षा के साथ फिल्मिस्तान कं. की 'अनारकली' का उल्लेख कर सम्पादक जी ने अपने फिल्मी ज्ञान के साथ ही इतिहास-ज्ञान की जानकारी का अच्छा परिचय दिया है। इस बार अक्षरलोक में पुस्तकों का संक्षिप्त समीक्षात्मक परिचय अंक को जनोपयोगी बनाता है। भारतीय नव संवतसर आपके, आपके परिवार को और इष्ट मित्रों को मंगलकारी हो।

विश्व मंच पर अवतरित
हुआ सौम्य नव वर्ष।
सभी जनों को दर्श हो
हर्ष सुयश उत्कर्ष।।

-दयानन्द जड़िया 'अबोध'
३७०/२७, हाता नूरबेग, सआदतगंज, लखनऊ

***

'आर्य्य लोक वार्ता' मार्च '१६ अंक सुन्दर कलेवर और अत्युत्तम पठन सामग्री लिए हुए प्राप्त कर हर्ष हुआ। पद्म विभूषण आचार्य विष्णु प्रभाकर जो एक प्रखर साहित्यकार, गांधीवादी समाज सेवी व विचारक हुए हैं उनकी अमूल्य रचनायें हम १९५१-५२ से ही पढ़ते आ रहे हैं उनसे हमारा पारिवारिक सम्बन्ध रहा है। मैं उनके निवास दिल्ली पर भी गया हूँ। आचार्य विष्णु प्रभाकर जी युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी के प्रशंसक रहे हैं इसका मुझे पता था क्योंकि 'आर्य्य लोक वार्ता' के प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य की गत कुछ दिनों पूर्व यह इच्छा थी कि विष्णु प्रभाकर महर्षि की जीवनी 'आवारा मसीहा' की तर्ज पर या उससे भी बढ़कर लिखें। किन्तु मार्च अंक में मुखपृष्ठ पर जो लेख प्रकाशित हुआ है महर्षि के बाल्यकाल की घटना- 'सच्चे शिव के दर्शन हम क्यों नहीं कर पाते'- इसका समाधान आचार्य जी ने बहुत ही स्पष्ट रूप से अपने उक्त लेख में दिया है। आज आर्य समाजों, समारोहों व वार्षिक उत्सवों में सभी कुछ होता है विख्यात वक्ता प्रवचनों के लिए बुलाए जाते हैं भजनोपदेशक व श्रोतागण आते हैं किन्तु महर्षि की जीवनी श्रोताओं को नहीं के बराबर सुनाई जाती है। पृष्ठ ३ पर बालक मूलशंकर के विवाह सम्बन्धी विचार उन्हीं के शब्दों में पढ़ा। प्रधान सम्पादक जी से प्रार्थना है कि आगामी अंकों में भी आचार्य विष्णु प्रभाकर जी की पूर्ण प्रस्तुति को अपनी सुविधानुसार पाठकों के ज्ञानवर्द्धन व प्रेरणा हेतु प्रकाशित करें।

'अक्षरलोक' स्तम्भ के अन्तर्गत श्री अमृत खरे द्वारा दी गई चार पुस्तकों की समीक्षा पढ़कर मैं लाभान्वित हुआ हूँ, साधुवाद। श्रीमती कमल अग्रवाल की पुण्य स्मृति में प्रकाशित पंक्तियां प्रेरणा दायक हैं। 'शुभाकांक्षा' में सुधी पाठकों के हृदयोद्गार पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है कि पाठकगण पूरे ध्यानपूर्वक पत्र में प्रकाशित सामग्री को पढ़ते हैं। पाठकों से नम्र निवेदन है कि वे कम से कम दो पाठकों को और जोड़ें जिससे २५-३० नये पाठकों के हृदयोद्गार व चित्र आगामी अंकों में प्रकाशित किये जा सकें। पुराने पाठक तो लिखते ही रहेंगे। आचार्य ओजोमित्र शास्त्री व वेद विदुषी डा.शान्ति देव बाला के निधन पर आपने जो भाव भीनी श्रद्धांजलि प्रस्तुत की है, वह सराहनीय है। मैं 'आर्य्य लोक वार्ता' के निरन्तर प्रगति की कामना करता हूँ।

-पाल प्रवीण
एम.एस.१२०, सेक्टर-डी, अलीगंज, लखनऊ

***

मार्च के अंक में अमर कवयित्री, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित 'झांसी की रानी' कविता के कुछ छंद पढ़ने को मिले। सम्पादक जी को धन्यवाद। यह रचना मेरे बाल्यकाल से अपने सम्पादित रूप में कक्षा-६ की हिन्दी की पाठ्य पुस्तक में स्थान पा रही है। विगत ४० वर्षों से इसके छंद किशोरों एवं बालकों में देशभक्ति का संचार करने में सफल सिद्ध हो रहे हैं। किन्तु खेद है कि इस कविता का निम्नांकित छंद पाठ्यक्रम से हटा दिया गया। कहा जाता है कि ऐसा सिंधिया परिवार के एक प्रभावी नेता के दबाव में किया गया। विवेकशील पाठकों की जानकारी हेतु वह छंद यहाँ उद्धृत है-

रानी बढ़ी कालपी आई, कर सौ मील निरन्तर पार
घोड़ा थककर गिरा भूमि पर, गया स्वर्ग तत्काल सिधार
यमुना तट पर अंग्रेजों ने, खाई फिर रानी से हार
विजयी रानी आगे चल दी, किया ग्वालियर पर अधिकार
अंग्रेजों के मित्र सिंधिया ने छोड़ी राजधानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

इतिहास के साथ छल करने का खेल राजनीति में होता आया है किंतु हमें सजग रहना है तथा अपनी संतति को सत्य के दर्शन एवं बोध कराते रहना है।

-श्रीश रत्न पाण्डेय
४१७/१०, निवाजगंज, चौक, लखनऊ

***

मनोरम रंगीन कलेवर से युक्त आर्य्य लोक वार्ता का मार्च २०१६ अंक देखा। सम्पादकीय बाजीराव बनाम मुगलेआज़म दो विख्यात फिल्मों का समीक्षात्मक अध्ययन मात्र न होकर फिल्मों की दशा तथा दिशा का पथ प्रदर्शक आलेख है। काव्यायन का पूरा पृष्ठ प्रशंसनीय है। कविवर श्री महेश चन्द्र द्विवेदी की कविता आरक्षण का ब्लैकहोल सामयिक चेतावनी होने के साथ ही राजीतिक चुनौती भी है। धारावाहिक अनन्त की खोज में महात्मा आनन्द गिरि ने बोध, उपबोध तथा प्रतिबोध की अवधारणाओं का तात्विक विवेचन प्रस्तुत किया है। इसी प्रकार मनुष्य का विराट रूप में श्री आनन्द कुमार ने 'संघर्ष' तथा 'प्रकाश' के मन्तव्यों पर अच्छा प्रकाश डाला है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आर्य जगत की प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आर्य्य लोक वार्ता आर्य समाज ही नहीं अपितु विश्व मानवता के लिये भी प्रकाश स्तम्भ के रूप में सतत देदीप्यमान रहेगी।

-सुरेन्द्रनाथ पाण्डेय 'मनीष'
सिविल लाइन्स, बांदा

***

'आर्य्य लोक वार्ता' के मार्च, २०१६ अंक में मुख पृष्ठ पर आचार्य विष्णु प्रभाकर जी का महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की प्रारंभिक जीवनी से सम्बन्धित कालजयी लेख 'हम सच्चे शिव के दर्शन क्यों नहीं कर सकते?' प्रेरक, सारगर्भित, ज्ञानवर्द्धक एवं हर प्रकार से उपयोगी है। यदि इस पुस्तक (भारतीय साहित्य के निर्माता-दयानन्द सरस्वती) के आगे के भी महत्त्वपूर्ण अंश इसी प्रकार प्रकाशित होते रहें तो यह एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं समाजोपयोगी काम सिद्ध हो सकता है। मुझे यह लेख बाँचते समय आचार्य विष्णु प्रभाकर जी की याद ताज़ा हो गई, जब २६ नवम्बर २००४ को हिन्दी भवन, नई दिल्ली में आयोजित काव्य-गंगा सम्मानोत्सव के अवसर पर रुबाई विधा में उल्लेखनीय योगदान हेतु मुझे उनके तथा श्री कमलेश्वर जी के कर कमलों से 'काव्य सौरभ' सम्मान ग्रहण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। आपका सम्पादकीय भी अद्वितीय है, जो इतिहास के झरोखों से नई रौशनाई बिखेर रहा है। 'काव्यायन' में श्री महेशचन्द्र द्विवेदी जी ने एक अछूते, नवीन रूपक 'ब्लैकहोल' का प्रयोग करके कविता के माध्यम से अवांछित आरक्षण से भविष्य में होने वाले दुष्परिणामों से लोगों को सचेत कर दिया है। शेष समग्र सामग्री भी पठनीय एवं स्तरीय है।

-डॉ.मिर्ज़ा हसन नासिर
जी-०२, लोरपुर रेजीडेंसी, न्यू हैदराबाद, लखनऊ

***

आर्य लोक वार्ता मार्च अंक बालक मूलशंकर से दयानन्द स्वामी तक आत्मबोध जागरण का शब्दचित्र तलस्पर्शी है, आचार्य विष्णु प्रभाकर का यह संकलित आलेख मानस वारिधि रत्न सदृश सम्माननीय है। देवालयों की बढ़ती संख्या और कुबेर-कोषों से 'भगवान' स्वयं स्तब्ध हो रहे होंगे, दम्भी और पाखण्डी मानव के प्रज्ञा चक्षु कब खुलेंगे? धार्मिकता का अवमूल्यन भी आम जन की दीनहीन दशा का एक प्रमुख कारण है परन्तु राजा नंगा है कहे कौन! 'बाजीराव मस्तानी' फिल्म कथासार के माध्यम से सम्पादकीय में राष्ट्रप्रेम से परिपूर्ण प्रेरक इतिहास का दिग्दर्शन कराना आपकी दिव्य दृष्टि का सुफल ही है। दीर्घ अन्तराल 'अक्षरलोक' आलोकित हुआ, कतिपय कृतियों का सारसंक्षेप सुखद लगा। अमृत खरे की सारस्वत साधना को नमन। काव्यायन में 'राजाभ' की मुक्तक गीत प्रशंसनीय विधा लगी। डा.नासिर की कविता में जीवन की निस्सार दार्शनिकता ने प्रभावित किया। कालजयी काव्य विशिष्ट प्रस्तुति सर्वथा प्रेरणीय एवं मननीय है। आचार्य ओजोमित्र शास्त्री का परलोकगमन आर्य जगत की अकल्पित क्षति एवं रिक्तता है। कुछ आयोजनों में मुझे भी उनके आशीर्वचन श्रवण करने का अवसर प्राप्त हुआ। उनके वैदुष्यपूर्ण मनीषी तत्वज्ञ की छवि मेरे मानस पटल पर अंकित रहेगी। उस अद्रव्य आत्मा प्रति भावाभार। विनय पीयूष के मूल स्वर संदेश में भी यही व्याख्यायित है-

कालसृष्टि के सत्यचक्र को रोक सका है कौन।
पथ अनाम, अनुगामी प्राणी, चला जा रहा मौन।
जब तक जीवन-स्नेह मिलेगा, दीपक को जलना है।
सेवा शुचिता, शक्तिभाव से जग-तम को छलना है।

-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
११७, आदिलनगर, लखनऊ -२२६०२२

***

'आर्य लोक वार्ता' मार्च अंक मिला। इसमें मेरा पत्र प्रकाशन के लिए धन्यवाद। रंग बिरंगा सजाधजा पत्र अब और अधिक चित्ताकर्षक हो गया है। आपके सुखद परिवर्तन के लिए बधाई। सम्पादकीय में बाजीराव मस्तानी फिल्म की कथावस्तु का ऐतिहासिक महत्व उजागर करके आपने नई दृष्टि दी। सचमुच इस भारतीय भावना के लए फिल्मकार की प्रशंसा की जानी चाहिए। वेद प्रवचन में 'प्रार्थना कैसी हो' विषय ने हृदय उद्वेलित कर दिया। सचमुच पूजापाठ में प्रदर्शन इतना अधिक है कि सच्ची भावना का लोप हो गया है। आज स्वामी दयानन्द जैसे महा पुरुष की आवश्यकता है जो मानव की आँखें खोल सके। शुभाकांक्षा में विद्वान पाठकों के विचार बहुत प्रेरक लगते हैं। यह पृष्ठ बहुत श्रेष्ठ और उपयोगी है। काव्यायन में राजाभ, गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र', नासिर, आभा मिश्रा आदि सभी रचनाओं की कवितायें स्तरीय तथा मन भावन लगीं। अन्य विषय वस्तु भी प्रेरणा दायी है। आपको नवसंवत्सर की शुभकामनाएँ।

-सविता वाणी
चौक, गौरीगंज, जनपद-अमेठी (उ.प्र.)

***

'आर्य लोक वार्ता' का जनवरी '१६ अंक देखा तो मन प्रफुल्लित हो गया। नये कलेवर में देखकर प्रसन्नता के साथ सन्तोष का भी अनुभव हुआ। प्रारंभ से ही मैं 'आर्य लोक वार्ता' से अपने को जुड़ा हुआ अनुभव करता रहा हूँ। सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य से मेरा परिचय तभी से है; जब गोला गोकर्णनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय में प्राचार्य था। विशेषकर 'आर्य लोक वार्ता' के सम्पादकीय विचारों की नवीनता, ताजगी ओर मौलिकता का शुरू से ही कायल रहा हूँ और अमृत खरे के वैदिक गीत मुझे अत्यंत रुचिकर और प्रिय लगते हैं।

'काव्यायन' की कविताएँ मन में साहित्य के प्रति प्यास जगाती हैं। मैं 'आर्य लोक वार्ता' के नवीन रूप के उत्तरोत्तर विकास हेतु शुभकामनाएँ अर्पित कर रहा हूँ।

-प्रो.विश्वम्भर दयाल शुक्ल
८४, ट्रांस गोमती, त्रिवेणी नगर-१, लखनऊ

***

भारत माता की जय

विचारणीय है कि आपलोक अपने छोटों बड़ों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं? क्या उन्हें प्यार व सम्मान नहीं देते? आपको अपने घरेलू वस्तुओं सम्पत्ति धन-दौलत से लगाव नहीं है क्या? हो सकता है आप कहें नहीं। इसका मतलब है कि आप बहुत बड़े त्यागी हैं दानी हैं। आपको जो भी मिलता है सब दान कर देते हैं। आपके पास कोई सम्पत्ति नहीं है। परन्तु आप को ज्ञात है सर्व साधारण इन्हीं सब के लिए, रोजी-रोटी के लिये संघर्ष कर रहा है। उसे अपनी वस्तुओं से बहुत लगाव है। अतः उसे भ्रमित न किया जाय। यह देश उसका भी है, देश की मिट्टी, हवा पानी भी उसका है। अतः इससे वह प्यार करेगा, सम्मान करेगा तभी तो नारा दिया जाता है-'भारत माता की जय'।

ऐसा कहीं नहीं लिखा है कि आपने देश का सम्मान न करो, उसकी जय न बोलो। आपको ज्ञात है कि जो नारा या राष्ट्रगीत आदि हम अपनी भाषा में देते हैं वही दूसरे देश अपनी भाषा में कहते हैं। प्रत्येक देश अपने आन बान शान व सम्मान के नारे लगाते हैं। केवल भारत ही है जहां आजादी के नाम पर हर तरह के विरोध किये जाते हैं जिससे देश का बहुत अहित होता है व विकास में बाधा आती है। लोग विभिन्न मजारों पर सिर झुकाते हैं, धूप दिया अगरबत्ती प्रसाद आदि चढ़ाते हैं। फिर देश व इसके झण्डे को सम्मान नहीं देंगे, इज्जत नहीं देंगे, सैल्यूट नहीं करेंगे क्या? आपको ज्ञात है कि 'भारत माता की जय' एक नारा, एक लहर है, जोश है, संगठन शक्ति है देश की ताकत है। यह नारा आज का नहीं है, यह बहुत पहले का नारा है जिसके बल पर आजादी की लड़ाई लड़ी गई। यह अभी तक गतिमान है। अब यह विरोधी बातें शुरू की जा रही हैं।

दुनिया का कौन सा देश है जहां अपने देश के सम्मान में, अपने रूप में नारे नहीं दिये जाते। बड़े नेताओं के लिए भी नारे लगते हैं- गांधी जी की जय, सुभाषचन्द्र बोस की जय, मौलाना आजाद की जय इत्यादि। अतः निवेदन है कि जो भी राष्ट्र विरोधी बातें करे उसे मना करें। देश में राष्ट्रविरोधी व समाज विरोधी बातें न हों तभी हमारे देश का तीव्र गति से विकास होगा। हमारा जन्म, पालन-पोषण इसी के जमीन पर, इसी के हवा पानी, मिट्टी में हुआ है तभी तो इसकी शान में कहते हैं- 'इसकी शान न जाने पाये चाहे जान भले ही जावे'। अभी कुछ दिन पूर्व कई सैनिक बर्फ में बद कर मर गये और एक की सांस चल रही थी जिसने अस्पताल में दम तोड़ा। उसकी पत्नी ने अपने बच्चों को सेना में भेजने को कहा है क्योंकि- 'सारे जहां से अच्छा हिन्तोस्तां हमारा, हम बुलबुलें हैं इसकी, ये गुलसितां हमारा'। अतः सभी से निवेदन है कि देश में शान्ति हो, हमारा देश तेजी से एक विकसित राष्ट्र हो कि पूरे विश्व में शान्ति स्थापित हो। अतः केवल देश हित में बयान हो।

-शिशिर कुमार श्रीवास्तव
सी-३३५/२, इन्दिरा नगर, लखनऊ-२२६०१६

***

धारावाहिक-(62)

मनुष्य का विराट् रूप

-आनन्दकुमार-

दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि मन, वचन, बुद्धि और व्यवहार से सरल, पवित्र और प्रभावशाली बनना चाहिए; अपने व्यक्तित्व को संकुचित, रहस्यपूर्ण एवं कलंकित नहीं होने देना चाहिए। मनुष्य को कोई भी ऐसा लोकनिन्दित कार्य नहीं करना चाहिए, जिसे गुप्त रखना पड़े क्योंकि उससे उसके प्रकट होने का भय उत्पन्न होता हैं। छिपकर पाप करने पर उसके खुलने का भय रहता ही है।

भय को प्रकाशित करने का अर्थ यह है- मन में किसी प्रकार की व्यथा, ग्लानि, शंका या पाप हो तो उसे छिपाकर न रखिए, तत्काल प्रकाशित कर दीजिए। छिपाने से दुर्भावनायें बढ़ती हैं। भय को छिपाना वैसा ही है जैसे गुप्त रोग को छिपाना। वह भीतर ही भीतर निरन्तर बढ़ता है और प्रबल हो जाता है। यदि आपके मन में भय की बात समा गई हो तो उसे अपने मित्रों से तुरन्त बता दीजिए। इससे मन साफ हो जायगा, भय को निकलने का एक रास्ता मिल जायगा। यदि किसी रहस्य को न समझने के कारण आपके मन में शंका होती है तो उसका उद्घाटन कीजिए, उसके कारण का पता लगाकर अपने भ्रम का निवारण कीजिए। उसके सम्बन्ध में कोई मिथ्या कल्पना करना ठीक नहीं है। हितोपदेश में लिखा है कि किसी शब्द के कारण को जाने बिना उससे अर्थात् शब्दमात्र से भयभीत नहीं होना चाहिए-'शब्दमात्रात्र भेतव्यमज्ञातं शब्दकारणम्।' संदिग्धावस्था भयंकर होती है। मन को सब प्रकार से निर्विकार, निष्कपट और संशय-रहित रखने में कल्याण है।

(ङ) प्रार्थना :-प्रार्थना से चाहे पुण्य हो या न हो, अतीत के दोषों का निराकरण हो या न हो, किन्तु भविष्य का लाभ अवश्य होता है। उससे अनेक आत्म-दुर्बलतायें मिटती हैं, चेतना-वृद्धि होती है। चेतना ही तो जीवन है। प्रार्थना से मनुष्य के बाह्य संकट टलें या न टलें, प्राण-संकट तो बहुत कुछ टल ही जाता है। उससे हृदय सजीव हो जाता है, विचार शुद्ध एवं संयत होते हैं और चित्त की एकाग्रता बढ़ती है। ध्यान से सम्पूर्ण शक्ति का उद्दीप्त और केन्द्रित होना स्वाभाविक है। आत्मशक्ति के उत्कर्ष से मन में भय के लिए स्थान नहीं रहता।

प्रार्थना के अलौकिक प्रभाव की बात जाने दीजिए, उसके द्वारा स्वभाव और विचार का जो परिष्कार होता है, उसी पर ध्यान दीजिए। आस्तिकता से हृदय में दैवी भावनाओं का संचार होता हे। दिव्य शक्ति के ध्यान से स्वभाव में दिव्यता, पवित्र शक्ति के ध्यान से पवित्रता आती है। महावीर के ध्यान से मन में वीरता की भावना तो भर ही जाती है। इसी प्रकार भव-भय-भंजन भगवान् के स्मरण से उनके गुणों का आभास अपने अन्तः करण में मिलता है। 'भयानां भयं भीषणं भीषणानाम्, गतिः प्राणिनां पावनं पावनानाम्' को अपने हृदय में धारण करने से मनुष्य को निर्भयता और शान्ति की अनुभूति होती ही है। प्रार्थना-उपासना के ये प्रत्यक्ष लाभ हैं।

प्रार्थना में क्या होता है? लोग अहंकार त्यागकर शुद्ध शान्त भाव से अपने उपास्य देव का आह्वान और उसका गुणगान करते हैं, मांगलिक द्रव्यों से मंगलमय एवं शक्तिमान् देवता को पूजते हैं, अपने अपराधों का प्रायश्चित्त और कष्टों का निवेदन करके उससे सुमति, सद्गति और शांति मांगते हैं। मन को प्रसन्न, बलवान् और निर्भय बनाने का क्या यह एक उत्तम उपाय नहीं है? मंगल-कार्य से अमंगल की आशंका कैसे होगी?

मंत्रों और भजनों पर भी ध्यान दीजिए। जो लोग मंत्र-शक्ति में विश्वास करते हैं, उनका तो कहना यह है कि मंत्रों से दैवी शक्तियों की सहायता अवश्य प्राप्त होती है। राजस्थान सरकार के आयुर्वेद विभाग के डायरेक्टर और काशी विश्व विद्यालय के आयुर्वेद विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष, सुप्रसिद्ध कविराज श्री प्रताप सिंह ने 'कल्याण' के जून, १९५० के अंक में अपना एक अनुभव छपवाया है। वे कुछ समय पूर्व किसी कठिन व्याधि से पीड़ित होकर अत्यंत निर्बल तथा जीवन से हताश हो गये थे। किसी भी औषधि से लाभ नहीं हो रहा था। तब उन्होंने एक दिन रात्रि में इस महा मृत्युंजय मंत्र का जाप किया-'ओं अघोरेभ्योऽपि घोरेभ्यः घोरघोरतरेभ्यः सर्वेभ्यः सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते, अस्तु तत्पुरुषाय विद्महे धियो रुद्रः प्रचोदयात्।' थोड़ी ही देर में उनकी वेदना शान्त हो गई और वे सुख से सो गये। दूसरे दिन से स्वस्थ होने लगे।

मंत्रों का ऐसा चमत्कारी प्रभाव देखा सुना जाता है। जो लोग इसमें विश्वास नहीं करते, उन्हें भी यह मानना पड़ेगा कि अन्तःकरण-चिकित्सा के लिये वे उपयोगी हैं। उनसे भावनाओं का संस्कार होता है। मंत्रों और भजनों के भाव हृदय को स्वस्थ, सरस और सचेत बनाते हैं। कभी कभी प्रार्थना का एक छोटा-सा गीत भी हृदय के निराशाजनक अन्धकार में आशा की ज्योति जगा देता है।

निश्चय ही प्रार्थना से सात्त्विक गुणों की वृद्धि होती है। मनुष्य यदि भगवान् को आगे रखकर काम करे तो उसे आत्म-पराभव का भय कदापि न होगा। प्रार्थना का यही मुख्य प्रयोजन है।

(ढ) शब्दब्रह्म :-शब्द में भय को नष्ट करने की अद्भुत शक्ति है। भयभीत होने पर लोग प्रायः चिल्लते हैं। चिल्लाने से भय अवश्य कम हो जाता है। इसी प्रकार बोलने से, गाने से और ताली पीटने से भय के स्थान पर उत्साह बढ़ता है। अँधेरी रात में शून्य स्थान में प्रायः लोग खांस कर या गुनगुनाकर अपना भय मिटाते हैं। उनके शब्द से सोई हुई दिशायें जग जाती हैं, हृदय का सूनापन मिट जाता है। जिस समय किसी प्रतियोगिता में या किसी कठिन कार्य में लोग शिथिलता या थकावट का अनुभव करते हैं, उस समय निकटस्थ व्यक्तियों के उत्साहवर्धक शब्द या करतलध्वनि से उनमें एक नवीन स्फूर्ति भर उठती है। उनकी दुर्बलता मिट जाती है। 'शाबाश' कहने से मनुष्य क्या घोड़े तक विशेष उत्तेजित हो जाते हैं। वे जी तोड़कर पराक्रम दिखाते हैं। शब्द-शक्ति के कुछ प्रमाण हम और देते हैं। जुझाऊ या युद्ध गीत से सैनिकों में जूझने का उत्साह उत्पन्न होता है। जिस समय लोग जय जयकार करते हुए कर्मक्षेत्र में बढ़ते हैं, उस समय उनके चरण पीछे नहीं पड़ते। उस समय तो वे मृत्यु का आलिंगन करने को तैयार हो जाते हैं। नारों के प्रभाव को अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

(मनुष्य का विराट् रूप से साभार क्रमशः)

व्याख्यान माला (19)

अनन्त की खोज

-महात्मा आनन्द गिरि-

मेरे अभिन्न मित्रों,

ज्ञान का विषय, ज्ञान का मार्ग 'क्षुरस्य धारा' है। नीरस लग रहा होगा। अब समय पूरा हो गया है। अतः समाहार कर रहा हूँ। ज्ञान का अर्थ है प्रत्यक्ष द्वारा यथार्थ का बोध। ऋषि दयानन्द ने कहा गुणों का प्रत्यक्ष इन्द्रियों द्वारा होता है और गुणी का प्रत्यक्ष मन आत्मा के संयोग से। अतः दोष रहित इन्द्रियाँ ओर संस्कार दोष से मुक्त मन ज्ञान के लिए आवश्यक है। ज्ञान का अर्थ हुआ विश्व ब्रह्माण्ड को उसकी पूर्णता में समझ कर 'स्व' के साथ उसके सम्बन्ध को समझना और लाभ उठाना। यही वेद शब्द का अर्थ है। वेद का अर्थ है सत्ता को विचार के द्वारा समझ कर जीवन का भद्र करना।

अतः मित्रों, भगवति वेद माता की शरण ग्रहण करो।

विश्वोद्धारक ऋषि ने वेद माता की गोद मानव मात्र के लिए सुलभ कर दी है। प्रभु प्रदत्त ज्ञान के प्रकाश में सत्य को पहचानो और अपने साथ विश्व मानवता का कल्याण करो। भगवान से प्रार्थना है कि वह इस राष्ट्र को वेद के बातए मार्ग पर चलने की शक्ति प्रदान करें। ओ३म् शान्ति !

गुरू

उपस्थित भद्र पुरुषों और श्रद्धा के योग्य माताओं,

गत सत्संग में आपके आगे ज्ञान पर कुछ विचार रखे थे। ज्ञान को वैदिक भाषा में वेद कहते हैं। यह वेदत्रयी भी कहलाती है। इसका यह अर्थ नहीं है कि वेद तीन हैं। कुछ आधुनिक पण्डित मन्यमान वेदत्रयी का अर्थ तीन वेद करते हैं और चौथे अथर्ववेद को पश्चात् की कृति बताते हैं। पर यह मान्यता गलत है। ऋषि दयानन्द ने वेदत्रयी का अर्थ बताया है कि वेद के तीन विषय हैं अर्थात् ज्ञान, कर्म, उपासना। वेद का वेदत्व यह है कि वह ज्ञान पूर्वक कर्म की प्रेरणा करे और वह कर्म विराट, अनन्त सत्य की समीप करने वाला हो। वस्तुतः सम्पूर्ण ज्ञान राशि का नाम वेद है सो वेद का अर्थ ज्ञान है। हम ज्ञान कहाँ से प्राप्त करते हैं? पर विचार करते हुए प्रकरण को आगे ले चलेंगे।

अपनी समग्रता के साथ जो कुद जाना जाता है वह ज्ञान है। ज्ञान के समस्त विषय हमसे बाहर स्थित हैं। हमारे चारों ओर विसतृत विश्व ब्रह्माण्ड के नाम रूपात्मक पदार्थ ज्ञान प्रत्यय है। रचा हुआ जगत ज्ञान का विषय है। विश्व ब्रह्माण्ड को देखने से ही ज्ञान स्फुरण्य होती है। सोचने का विषय, चिन्तन का विषय या तो नाम रूपात्मक पदार्थ होता है अथवा उससे सम्वन्धित कोई बात। चूँकि चिन्तन निरालम्ब नहीं होता बिना भौतिक आधार के न तो कुछ सोचा जा सकता है न चिन्तन किया जा सकता है। जब भी कुछ तुम सोचते हो किसी चीज के बोर में सोचते हो। उस चीज का कुछ न कुछ नाम होता है और जिसका नाम होता है उसका रूप भी होता है। अस्तु चिन्तन का विषय नाम रूप ही होता है। ऐसी नहीं हो सकता कि चिन्तन हो और उसका आधार रूपात्मक प्रत्यक उपस्थित न हो। हाँ ऐसा हो सकता है कि भौतिक सत्ता अवचेतन में हो और हम उसकी उपस्थिति न जान पायें। ब्रह्म चिन्तन के लिए प्रकृति ही एकमात्र आधार है। व्यापक ब्रह्म का चिन्तन व्याप्य प्रकृति को अस्वीकार कर नहीं हो सकता। वेदान्त सूत्र में ब्रह्म जिज्ञासा का उत्तर 'जन्माद्यस्य यतः' दिया गया है। सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और लय ब्रह्म का लक्षण है। वेदान्त सूत्र में दिए लक्षण पर आपत्ति की गयी। यह कहा गया कि ये ब्रह्म के लक्षण नहीं अपितु सृष्टि के लक्षण हैं। इस आपत्ति का परिहार आचार्य शंकर ने अपने वेदान्त भाष्य में किया है। 'जन्माद्यस्य यतः' को उन्होंने ब्रह्म का तटस्थ लक्षण कहा है। तटस्थ लक्षण उसे कहते हैं जो दूर से लक्ष्य की पहचान करावे। जैसे सिंहासन छत्र राजदण्ड देखकर राजा का ज्ञान होता है चाहे राजा उस सिंहासन पर न भी बैठे हुए हों। सिंहासन और छत्र रजा नहीं है वरन् राजा का बोध कराते हैं। यह न तो राजा का स्वरूप है न स्वभाव। फिर भी इनसे राजा के अस्तित्व का बोध होता है। उसी प्रकार सृष्टि ब्रह्म का स्वरूप नहीं है किन्तु तटस्थ भाव से ब्रह्म की सत्ता को प्रकट करती है। कहने का तात्पर्य यह है कि महर्षि व्यास बिना दृश्य जगत का आधार लिए ब्रह्म का लक्षण नहीं कर सके। तो ऐसा सोचना कि चिन्तन तो हो किन्तु उसका विषय नाम रूपात्मक जगत में प्रत्यक्ष न हो असम्भव बात है। अतः चिन्तन और विचार के लिए केवल मात्र नाम रूपात्मक प्रत्यय ही आधार है अस्तु ज्ञान चाहे अपरा या परा हो उसका आधार विश्व रचित ब्रह्माण्ड का नाम रूप ही हो सकता है। जगत के प्रदार्थ प्रभा हैं, ज्ञान के विषय हैं, जो हमसे बाहर हैं और चारों ओर फैले हुए हैं। अतः ज्ञान प्रेरणा सर्वदा बाहर से होती है। सीधे सरल शब्दों में कहा जा सकता है कि मनुष्य को ज्ञान बाहर से मिलता है, निमित्त से मिलता है। मनुष्य स्वयं ज्ञान उत्पन्न कर ले ऐसा कभी नहीं हो सकता क्योंकि वह स्वभाव से ज्ञानी नहीं है। मनुष्य और पशु में ज्ञान के आधार पर बड़ा विचित्र भेद है इस अर्थ में पशु मनुष्य से श्रेष्ठ है। आपने अगर ऋषि कृत ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का स्वाध्याय किया होगा तो प्रथम अध्याय वेद विचार में यह तथ्य पढ़ा होगा। ऋषि ने कहा कि कि मनुष्य और पशु में यह अन्तर है कि पशु स्वाभाविक ज्ञान वाला है और मनुष्य ऐसा नहीं है। स्वाभाविक ज्ञान से प्रयोजन उस ज्ञान से है जिसके बिना शरीर धारण ही सम्भव न हो। शरीर रक्षा और इन्द्रियों का बोध स्वाभाविक ज्ञान कहलाता है। कुत्ते व बकरी को वह क्या खाये क्या न खाये यह सीखने के लिए किसी शिक्षक की दरकार नहीं है। मछली के बच्चे को तैरने और ऊष्म धारा के अनुकूल रहने की जानकारी कोई प्रदान नहीं करता है। पशुओं को भोजन, शरीर रक्षण और प्रजनन के नियम किसी से सीखने नहीं पड़ते। प्रकृति ने यह ज्ञान स्वभाव से उनको दिया है। किन्तु मनुष्य के साथ यह बात नहीं है। इस आदमी के बच्चे को अगर खड़ा होना न सिखाया जाय तो यह जिन्दगी भर पेट के बल रेंगता रहे। इस माने में मनुष्य से पशु अधिक श्रेष्ठ है। आज का शिक्षित मनुष्य पशुओं से इतना पिछड़ा हुआ है कि उसे अपनी खुराक की भी जानकारी नहीं। ज्ञान और विकास के इतने विकास के पश्चात् भी मनुष्य यह नहीं जान सका है कि वह क्या खाये और क्या न खाये।

एक ईसाई साहब ने एक बार बातचीत के दौरान यह शंका उपस्थित की- कहने लगे-'आर्यों के ईश्वर ने आर्यों के साथ बड़ा अन्याय किया।' मैंने पूछा-'क्या अन्याय किया है भइया?' वह बोले-'पशुओं को स्वाभाविक ज्ञान दिया और आर्यों को स्वाभाविक ज्ञानी नहीं बनाया।' मैंने कहा-'मित्र यह बात तुम्हारी समझ से बाहर है।" बोले-'क्यों साहब?' मैंने कहा-'क्योंकि इसका सम्बन्ध तर्क ओर बुद्धि से है और आपक यहाँ तर्क और बुद्धि का प्रयोग निषिद्ध है।' बोले-'यह क्या कहते हैं बुद्धि से हीन तो आपकी बात है।' मैंने कहा-'अगर परमात्मा पशुओं को यह ज्ञान न देता तो आप इनके लिए शिक्षण केन्द्र खोलते या अध्यापक नियुक्त करते। (मन्द हास्य) वह हंस पड़े बोले-'मनुष्य को यह ज्ञान क्यों नहीं दिया?' मैंने कहा-'भइया मानव जीवन केवल भोग योनि होता, तब तो परमात्मा अवश्य ऐसा बनाते जैसा पशुओं को बनाया है। मानव तो कर्म योनि है। जिसकी सार्थकता पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति है। अगर इसे स्वभाव ज्ञान मिल जाता तो यह उन्नति के लिए प्रयत्न न करता। पशु के समान इसकी बुद्धि भूख से तृप्त रहती और न इसमें जिज्ञासा ही उत्पन्न होती।' जानते हो जिज्ञासा ज्ञान की जननी है। जिज्ञासा एक भूख है जिसमें जगती है वह परिश्रमी अध्ययनशील हो जाता है। जिज्ञासा अज्ञात हो तो ज्ञात में लाती है मानव ज्ञान विज्ञान के विकास में मूलभूत प्रेरक तत्व जिज्ञासा ही है, जिज्ञासा ज्ञान नेत्र खोलने वाली वस्तु है जिसमें जिज्ञासा जागृत होती है वह ज्ञान प्राप्त करके अमृत हो जाता है। चूंकि मनुष्य स्वभाव ज्ञानी नहीं है इसलिये परमात्मा सृष्टि के प्रारम्भ में ज्ञान प्रदान करता है। अगर परमात्मा ज्ञान प्रदान न करता तो मानव जीवन की वह उन्नति सम्भव नहीं थी जो आज तुम देखते हो। इस सम्बन्ध में कुछ लोग कहते हैं कि मनुष्य ने अनुभव से विकास किया। ज्ञान उस विकास का फल है। इस मान्यता को विकासवाद कहा जाता है। भाई विकासविदों- अनुभव के आधार पर मनुष्य ज्ञान का विकास करता है इसे कौन अस्वीकार करता है। हमारा कहना तो यह है कि मनुष्य ने ज्ञान उत्पन्न नहीं किया। उसे ज्ञान किसी और ने दिया है। जब तक कोई उसे बताने वाला न होता तो वह कुछ भी नहीं जान सकता था। आज भी बिना बोध कराये आपका बच्चा स्वयं कुछ भी नहीं सीख सकता। मुझे एक प्रवचन की बात याद आ गई। मैं एक सत्संग में बैठा था एक वक्ता प्रभावशाली ढंग से बोल रहे थे। प्रवचन का विषय ज्ञान था। किंतु जो कुछ कह रहे थे वह ज्ञान से दूर की बात थी। वह बोले-'मनुष्य स्वभाव से ज्ञानी है उसे बाहर से ज्ञान नहीं मिलेगा। ज्ञान अन्दर उत्खनन करने से मिलेगा। अतः शास्त्र प्रवचन कुछ नहीं चाहिये। अन्दर उतरो अन्दर। ज्ञान अन्दर मिलेगा। सारा ज्ञान तुम्हारे अन्दर रखा है। तुम पूर्ण हो।' इत्यादि। सत्संग समाप्त होने पर मैं डेरे पर लौट आया। रह रह कर उनकी बातें गूंज रही थीं। *(क्रमशः)*

काव्यायन

लहूलुहान लोकतंत्र

❑जगमोहन नाथ कपूर 'सरस'

पंजे में निरीहता के जनता कराह रही,
हँसती गरीबी अर्थ खोने लगा लोकतंत्र।
सत्ता-मठाधीशों ने बनाया भोगतंत्र इसे,
लोक त्रस्त, रोग ग्रस्त होने लगा लोकतंत्र।
लादी लदी ऋण की विवशता प्रभावी हुई,
दारुण दुसह दुःख ढोने लगा लोकतंत्र।
तत्त्व अराजकता के बाढ़ से भयावह हैं,
बीज परतंत्रता के बोने लगा लोकतंत्र।।

लायक नहीं हैं पर हो गये विधायक हैं,
सरकार खलनायकों की पाठशाला है।
जो भी आया शरण उसी पे वज्रपात हुआ,
इनकी दिवाली, पिटा उसका दिवाला है।
चोरियाँ, डकैती, व्यभिचार, दुराचार, कत्ल,
होते खुले आम बहरों का बोलबाला है।
कान पर जूँ है रेंगती न लाख पीटो ढोल,
लोकतंत्र को लहूलुहान कर डाला है।।

—रामप्रभा बी-1/35 सेक्टर-डी-1 एल.डी.ए. कालोनी कानपुर रोड लखनऊ

भारत माता की जय बोलें

❑गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

जिस मिट्टी में पले-बढ़े हम, भाग्य विधाता की जय बोलें।
भारतमाता की जय बोलें।
राष्ट्र नहीं भूखण्ड मात्र है, अपितु प्राणमय है कण-कण,
जिसके देवतुल्य लगते हैं, नदियाँ, पर्वत, वृक्ष, भवन,
जन जन के मन बसने वाले, भय-दुःख त्राता की जय बोलें।

धर्म-कर्म सद्भाव स्थली है, रहते जहाँ सभी मिल जुल,
बहु संस्कृतियों के संगम में, विविध रंग जाते हैं घुल,
सुख, समृद्धि, विज्ञान, ज्ञान, बल, मंगलदाता की जय बोलें।

गर्व सहित 'जयहिन्द' घोष हो, 'जिन्दाबाद मादरे वतन',
रहें देश में तो विरोध के, असहनीय विषबुझे वचन,
जन-गण के प्रति सद्निष्ठा से, स्नेहिल-नाता की जय बोलें।

सीमाओं पर आँच न आये, जय हो ध्वजा तिरंगा की,
जग में पुर्स्थापित होगी, महिमा गीता - गंगा की,
वीर भोग्या वसुन्धरा-सुत, जीवन दाता की जय बोलें।
भारतमाता की जय बोलें।

—117 आदिल नगर विकास नगर लखनऊ-22

'अबोध' के दोहे

❑दयानन्द जड़िया 'अबोध'

मांसाहार न कीजिये, कहते वेद पुकार।
परम अहिंसा धर्म है, करिये यही प्रचार।।

सुन्दर सौम्य सुस्वास्थ्य हित, अच्छा शाकाहार।
उदर न कब्रिस्तान है, यही तथ्य ले धार।।

करें भ्रूण हत्या नहीं, अण्डे खा कर आप।
नहीं जीव हत्या सदृश, जग में कोई पाप।।

चील गृद्ध कौवे करें, मृत जीवों का भोग।
मांस बढ़ाता है वसा, दे शरीर को रोग।।

स्वास्थ्य चिकित्सक कर रहे, अच्छा शाकाहार।
इसे ग्रहण कर लीजिये, दीर्घ आयु उपहार।।

करते रहे सदैव से, सात्विक भोजन आर्य।
पीड़ा मिले न अन्य को, पुण्य भाव यह धार्य।।

यज्ञ-साथ हो ओम् स्वर, मह ऋषियों का शोध।
तज हिंसा सद्वृत्ति गह, यश लें कहें 'अबोध'।।

—चन्दा मण्डप, 370/27, हाता नूरबेग, संगमलाल वीथिका, सआददतगंज, लखनऊ-17

दीप जलता रहे

❑डॉ.मिर्ज़ा हसन नासिर

मैकशों में आज फिर झगड़ा हुआ,
जाम फूटे जख्मी मयख़ाना हुआ।

आँधियाँ हों या कि तूफाँ हों भले,
दीप रहना चाहिए जलता हुआ।

फिर सुनाई उसने अपनी इक गज़ल,
फिर जमाना उसका दीवाना हुआ।

वो जो गुलशन में अचानक आ गए,
गुल खिले मौसम भी मस्ताना हुआ।

उसको छत पर देखकर कहते हैं लोग,
चाँद इतना आज क्यों उजला हुआ!

सारे चारागर ठगे से रह गए,
इश्क का बीमार कब अच्छा हुआ।

आ गए मैकश पुराने याद कुछ,
मैकदे में उनका फिर चर्चा हुआ।

कल यहीं फूलों की महफिल थी सजी,
आज सन्नाटा है क्यों, यह क्या हुआ?

फिर चलीं ताजा हवाएँ बाग में,
फिर बहारों का यहाँ फेरा हुआ।

भर रहे हो आहें 'नासिर' किस लिए,
प्यार में तुमको भी क्या धोखा हुआ?

—जी-02, लोरपुर रेज़ीडेन्सी न्यू हैदराबाद, लखनऊ

तपसी जीवन

❑डॉ.उमाशंकर शुक्ल 'शितिकंठ'

तरु रच्छहिं औरन्ह प्रानिन्ह का,
इन्हका तपसी जस जीवनु है।
सबहीं कहँ देइँ कछू न कछू,
अस बृच्छन का तनु है, मनु है।
धनवान सोई जग मां जेहिते-
उपकार सधै धनि सो धनु है।
मन बानिहुँ कर्महुँ औरन्ह का,
हितु साधै सो सन्त है, सज्जनु है।।

—78, त्रिवेणी नगर-1, डालीगंज कासिंग लखनऊ

हर्ष-चतुष्पदी

❑बाँके बिहारी 'हर्ष'

गुमनामी बाबा की है,
बनी समाधि जिधर।
वह तो वास्तव में है,
गौरैया देवी का मंदिर।

जीवन भर जो करते थे निष्काम कर्म,
उनका अब भी तो है अज्ञात मर्म।
कौन बने उनकी सम्पत्ति का स्वामी,
गुमनामी बाबा अब भी तो है गुमनामी।

—अवध मोटर वर्क्स सिविल लाइन्स फैजाबाद

कालजयी काव्य

कृषि और कृषक

❑राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

अब पूर्व की-सी अन्न की होती नहीं उत्पत्ति है,
पर क्या इसी से अब हमारी घट रही सम्पत्ति है?
यदि अन्य देशों को यहाँ से अन्न जाना बन्द हो-
तो देश फिर सम्पन्न हो, क्रन्दन रुके, आनन्द हो।।

वह उर्वरापन भूमि का कम हो गया है, क्यों न हो?
होता नहीं कुछ यत्न उसका, यत्न कैसे हो, कहो?
करते नहीं कर्षक परिश्रम, और वे कैसे करें?
कर-वृद्धि है जब साथ तब क्यों वे वृथा श्रम कर मरें?

घनघोर वर्षा हो रही है, गगन गर्जन कर रहा,
घर से निकलने को कड़ककर वज्र वर्जन कर रहा।
तो भी कृषक मैदान में करते निरन्तर काम हैं,
किस लोभ से वे आज भी लेते नहीं विश्राम हैं?

बाहर निकलना मौत है, आधी अँधेरी रात है,
आ, शीत कैसा पड़ रहा है, थरथराता गात है।
तो भी कृषक ईंधन जलाकर खेत पर हैं जागते,
वह लाभ कैसा है न जिसका लोभ अब भी त्यागते।

यह अन्न तो लेंगे विदेशी, लाभ क्या उनको कहो?
मिलता उन्हें जो अर्द्ध भोजन विघ्न उसमें भी न हो!
कहते इसीसे है कि क्या आजन्म करना था उन्हें,
भिक्षुक बनाते पर विधे, कर्षक न करना था उन्हें।

—'भारत भारती' से संपादित अंश

कृषक की पुकार

दुनिया में कौन हमारा है!

❑प्रियपाल

[मेरठ गौरव श्री प्रियपाल जी ने यह कविता भोपाल-प्रवास में सन् १६५६ में लिखी थी। कविता की मार्मिकता का अन्दाजा इसी से लगाया जा सकता है कि आज मोदी सरकार किसानों की फसलों के बीमा पर विशेष जोर दे रही है; जबकि आज से आधी सदी पहले ही उसकी ओर कवि ने ध्यान आकर्षित किया था। प्रस्तुत है वृहद् कविता का सम्पादित अंश। -सं.]

उत्तम खेती, मध्यम बाणिज, निखद चाकरी भीख निदान।
यही कहा पहिले वालों ने, उसे लिया है हमने मान।।
अपना भाग न मिलता हमको, हम गँवार कहलाते हैं।
सभी लोग कुर्सी पर से ही, हमें यत्न सिखलाते हैं।
लेकिन, अपनी बाहों का ही, हमको सदा सहारा है।।
अभी किनारा दूर भला, दुनिया में कौन हमारा है।।

आँधी पत्थर भूचालों से, भी निशि दिन लड़ना पड़ता।
वर्षा सूखा भी आंगन में, सहसा ही आकर अड़ता।
घर में लाने से पहिले ही, सारी विपत्तियाँ आतीं।
महानाश करके कृषकों को, दर-दर की भीख मँगाती।।
जब नालिश-कुर्की हो जाती तब, बिगड़ा हाल हमारा है।
अभी किनारा दूर भला, दुनिया में कौन हमारा है।।

धनिकों का धन-धान्य यत्न से, सदा सुरक्षित रहता है।
प्रासादों में और तिजोरी, बैंकों में जो रहता है।
फिरभी, वे अपने जीवन-धन, का बीमा करवाते हैं।
दैवी प्रकोप से अपने को, वे सब भांति बचाते हैं।
लेकिन दुखियों का तुम्हीं कहो, इस जग में कौन सहारा है?
अभी किनारा दूर भला, दुनिया में कौन हमारा है।।

कृषकों की सुख-सम्पति को, खाती सदा महामारी है।
भूखे बच्चे, नंगी दुखिया, बस रहती घरवाली है।।
मेरी हालत पर बोलो, कब, रहम किसी को आया है?
मेरी फसलों-पशुधन का बीमा किसने कब करवाया है?
अभियानों की धूम योजना, कागज बीच सँवारा है।।
अभी किनारा दूर भला, दुनिया में कौन हमारा है।।

हमीरपुर-समाचार

उदयवीर सिंह यादव हमीरपुर के जिलाधिकारी बने

कर्तव्य परायण एवं कुशल प्रशासक के रूप में ख्याति प्राप्त श्री उदयवीर सिंह यादव आई.ए.एस. को उ.प्र.सरकार ने हमीरपुर का जिलाधिकारी नियुक्त किया है। इसके पूर्व श्री यादव पंचायती राज उ.प्र.के निदेशक पद पर कार्यरत थे। पंचायत चुनावों को अत्यंत सूझबूझ और शालीनता से सम्पन्न कराने का श्रेय आपको प्राप्त है।

आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह-२०१४ में सम्मानित श्री उदयवीर सिंह को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। 'आर्य लोक वार्ता' के प्रकाशन काल १९९८ से ही श्री यादव की सद्भावनाएँ एवं सहयोग आर्य लोक वार्ता को सुलभ रहा है। *(-सम्पादक)*

राजस्थान-समाचार

नवसंवत्सर कार्ड विमोचन

कोटा, ८ अप्रैल। भारतीय संस्कृति के रक्षण के लिए ही महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की थी जिसके परिणामस्वरूप आर्य समाज ने समाज को नई दिशा दी। उक्त विचार कोटा उत्तर के विधायक प्रहलाद गुंजल ने आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर जारी नव संवत्सर कार्ड के विमोचन के अवसर पर व्यक्त किये। नयापुरा कोटा स्थित कार्यालय पर आर्य समाज के नववर्ष कार्ड विमोचन के अवसर पर उन्होंने कहा कि प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक मापदण्ड जिन्हें समाज भूलता जा रहा है आर्य समाज उसी जीवन पद्धति को आगे बढ़ा रहा है। इससे पूर्व आर्य समाज जिला सभा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा की अगुवाई मे आर्य विद्वान अग्निमित्र शास्त्री तथा आर्य विदुषी श्रीमती सुदेश आहूजा तथा कोटा की विभिन्न आर्य समाजों के प्रधान कैलाश बाहेती, हरिदत्त शर्मा, अरविन्द पाण्डेय, प्रेमनाथ कौशल, जे.एस.दुबे, उमेश कुर्मी, श्योराज वशिष्ठ ने विधायक जी से उनके कार्यालय पर मुलाकात की। इस अवसर पर आर्य समाज जिला सभा द्वारा विधायक प्रहलाद गुंजल को वेदमंत्रोच्चार के साथ केसरिया दुपट्टा ओढ़ाकर तथा केसरिया साफा पहना कर स्वागत किया गया। कार्यक्रम में विधायक प्रहलाद गुंजल द्वारा नवसंवत्सर प्रतिपदा के अवसर पर जिलासभा कोटा द्वारा तैयार आर्य समाज स्थापना दिवस एवं भारतीय नववर्ष के कार्ड का विमोचन किया गया। *(अरविन्द पाण्डेय)*

निराश्रित बालिकाओं को वस्त्र वितरित

कोटा, २० मार्च। पंजाबी जनसेवा समिति ने रंगबाड़ी स्थित मधु स्मृति संस्थान में रह रही निराश्रित बालिकाओं को नए वस्त्र वितरित किये। समिति के अध्यक्ष अर्जुनदेव चड्ढा ने बताया कि समाज की श्रीमती सीमा पिपलानी, श्रीमती पूनम चड्ढा ने लड़कियों को वस्त्र पहनाए। अर्जुनदेव चड्ढा ने बालिकाओं से कहा कि आपकी परीक्षाएं शीघ्र होने वाली हैं, मन लगाकर व एकाग्रचित्त होकर पढ़ाई कर परीक्षा की तैयारी करें। कार्यक्रम के प्रारंभ में आर्य विद्वान शोभाराम आर्य ने उपस्थित सभी को गायत्री मंत्र का सस्वर पाठ कराया। मधु स्मृति संस्थान की महामंत्री वृजबाला निर्भीक ने आभार व्यक्त किया। *(दर्शन पिपलानी, महामंत्री)*

वैदिक परिवार शिविर

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के तत्वावधान में वैदिक परिवार शिविर का आयोजन २० से २२ मई २०१६ तक प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डॉ.सोम देव शास्त्री के निर्देशन मे किया जा रहा है। इस अवसर पर विशेष प्रशिक्षण देने के लिए स्वामी सुधानन्द जी, योग गुरु उमाशंकर शास्त्री, प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री केशवदेव शर्मा उपस्थित रहेंगे।

शिविर आवासीय है तथा इसमें केवल दम्पति भाग ले सकेंगे और १६ मई की शाम तक उन्हें नवलखा महल, उदयपुर पहुँचना होगा। सभी इच्छुक संभागियों को अपना पंजीयन दिनांक ५ मई २०१६ तक कराना होगा। पंजीयन शुल्क प्रति व्यक्ति एक सौ रुपये देय होगा। संभागीगण पूर्वानुमति से ही भाग ले सकेंगे। आवास व भोजन व्यवस्था न्यास की ओर से निःशुल्क की जावेगी। स्थानीय दम्पति भी लाभ की दृष्टि से इस शिविर में आमंत्रित हैं।

सम्पर्क सूत्र-नारायण मित्तल, संयोजक; मोबाइल नं. ९४१४१६९४४०

उत्तराखंड-समाचार

आचार्य दीपक सम्मानित

आर्य उपप्रतिनिधि सभा लखनऊ के पूर्व प्रधान डॉ.रूपचन्द्र दीपक, जो सम्प्रति पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार में साधना रत हैं- को डी.ए.वी.इण्डिया आर्गनाइजेशन ने वर्ष २०१५ हेतु सम्मानित करने का निश्चय किया है। ज्ञातव्य है कि उकत संगठन प्रतिवर्ष किसी न किसी महत्वपूर्ण अखिल भारतीय प्रतिष्ठा प्राप्त विद्वान् को सम्मानित करने हेतु चयन करता है। इस वर्ष डॉ.दीपक का चयन किया गया है।

'आर्य लोक वार्ता' की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

सीतापुर-समाचार

अवधेश शुक्ल सम्मानित

डॉ.रवि रस्तोगी निदेशक हिन्दी और हिन्दुस्तान फाउन्डेशन के केन्द्र निदेशक ने ऋषिकेश वीरभद्र नगर में आयोजित एक समारोह में प्रख्यात कवि गीतकार पं.अवधेश शुक्ल को 'पर्यावरण भूषण' उपाधि प्रदान करके सम्मानित किया।

नगर की अनेक संस्थाओं ने श्री शुक्ल को इस इस महनीय उपलब्धि हेतु बधाइयां दी हैं। *(मुजीब सीतापुरी द्वारा)*

सण्डीला-समाचार

योग की लहरें

बेहैदर निवासी प्रख्यात वैदिक विद्वान् स्व.विष्णु शास्त्री की पौत्री सुश्री सविता आर्या जी आर्य समाज मंदिर परिसर में ५.३० से ६.३० बजे प्रातः वेला में योग विद्या का अभ्यास करा रही हैं। पूर्णिमा के दिन योगार्थियों द्वारा वृहद् यज्ञ का आयोजन भी किया जाता है।

नव सवंवत्सर

आर्य समाज सण्डीला के तत्वावधान में नव संवत्सर एवं आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। यज्ञ के उपरान्त वैदिक विद्वानों ने नव संवत्सर एवं आर्य समाज के महत्व पर प्रकाश डाला।

लखनऊ-समाचार

डॉ.शान्तिदेव बाला की स्मृति में शान्तियज्ञ

वैदिक विदुषी डॉ.शान्तिदेव बाला की स्मृति में २१ फरवरी २०१६ को उनके निवास महानगर में वैदिक विद्वान् पं. दीनानाथ शास्त्री के आचार्यत्व में शान्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ जिसमें पारिवारिक जनों के अतिरिक्त विभिन्न आर्य समाजों के प्रतिनिधि गण भी सम्मिलित हुए। कार्यक्रम का संचालन श्री मनीष आर्य ने किया। यज्ञोपरान्त पं.दीना नाथ शास्त्री ने अपने पुराने संस्समरण याद करते हुए डॉ.बाला जी के उज्ज्वल चरित्र को प्रस्तुत किया। महिला शक्ति मण्डल की सदस्याओं ने भी अपने उद्गार व्यक्त किये। योगाश्रम अलीगंज के श्री पाल प्रवीण ने अपने संस्मरणों का उल्लेख किया तथा सभी को अवगत कराया कि डॉ.बाला ने उनसे कहा था कि यज्ञ करते समय कुछ वेदमंत्रों के अर्थ को भी समझाया जाय। तभी से हम यज्ञ करते समय साथ साथ मंत्रों के अर्थ भी बोलते हैं। अन्त में सभी आर्य समाजों की ओर से जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा लखनऊ के प्रधान श्री रमेश चन्द्र त्रिपाठी ने डॉ.बाला की स्मृति में अपने उद्गार व्यक्त किये। *(पाल प्रवीण)*

अनुकरणीय!

आर्य समाज आदर्श नगर, लखनऊ ने पुनः अपनी स्वाध्यायशीलता और सिद्धान्तनिष्ठा का परिचय देते हुए 'आर्य लोक वार्ता' के प्रति अपनी सुदृढ़ आस्था का परिचय दे दिया है। आर्य समाज के २२ सदस्यों ने अपना वार्षिक सहयोग जनवरी २०१६ में ही संकलित करके अध्यक्ष श्री आत्मप्रकाश बत्रा के माध्यम से आर्य लोक वार्ता कार्यालय में पहुँचा दिया। आर्य समाज आदर्श नगर के सभी सदस्यों को धन्यवाद। सदस्यों की नामवली अगले अंक में प्रकाशित की जायगी। *-सम्पादक*

कर्मयोगी-अभिनन्दन ग्रंथ

शुभकामना संदेश तथा रचनाएँ आमंत्रित

यह तथ्य सुविदित है कि नवजागरण के पुरोधा आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती वह प्रथम महापुरुष थे जिन्होंने 19वीं शताब्दी में 'भारत-भारतीयों के लिए' की उद्घोषणा की थी- जिससे प्रेरणा प्राप्त कर देश में स्वदेश प्रेम और स्वाधीनता की प्राप्ति हेतु सत्याग्रह और संघर्ष की ज्वालाएँ घधक उठी थीं। आजादी की इस लड़ाई में आर्य समाज ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिसमें आर्य समाज टाण्डा का योगदान विशिष्ट था, इसके पूर्व प्रधान बाबू मिश्रीलाल आर्य महर्षि के दीवाने थे। स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े और जेल की यातनाएँ सहीं, उनके प्रभाव से महात्मा गाँधी का पदार्पण आर्य समाज मंदिर में हुआ था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व सन् 1944 ई. में आर्य समाज टाण्डा के उसी योद्धा ने टाण्डा में नारी-शिक्षा के अभाव को दूर करने का ऐतिहासिक कार्य करते हुए- आर्य कन्या पाठशाला स्थापित किया, जो वर्तमान में एक वटवृक्ष के रूप में 'मिश्रीलाल आर्य कन्या इंटर कॉलेज' के माध्यम से सामाजिक सौहार्द एवं समरसता का उच्चतम आदर्श स्थापित कर रहा है। विद्यालय का अनुशासन, अध्ययन जनपद में प्रमुख स्थान रखता है जिसके साक्ष्य रूप में इस शिक्षा संस्था के निरन्तर दो प्रधानाचार्यों को राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त होना स्वयं में प्रमाण है।

आनन्द बाबू ने अपने पुरुषार्थ व सूझबूझ से टाण्डा की एक और महती आवश्यकता का अनुभव करके सन् 1999 ई. में डी.ए.वी.एकेडमी (अंग्रेजी माध्यम) नामक संस्था स्थापित की, जो सी.बी.एस.ई. से 12वीं तक मान्यता प्राप्त है। आर्य जगत् के लिये गौरवमयी बात है कि 'मिश्रीलाल आर्य कन्या' में हिन्दू बालिकाओं के साथ ही मुस्लिम बालिकाओं का अनुसरण करते हुए डी.ए.वी.एकेडमी में भी हिन्दू-मुस्लिम बालक/बालिकाएँ शिक्षा ग्रहण करने के साथ वैदिक संस्कृति सभ्यता के संस्कारों से अपने को समृद्ध करती हैं।

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि साम्प्रदायिक सामंजस्य और समरसता की इस मशाल को बाबू मिश्रीलाल जी ने प्रज्वलित किया था जिसे निरन्तर सींचने का कार्य उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री आनन्द कुमार आर्य कर रहे हैं। 80वर्षीय कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली; आर्य प्रतिनिधि सभा, बंगाल; आर्य समाज टाण्डा के माध्यम से आर्य समाज के उत्थान सम्बन्धी कार्यक्रमों को संचालित करते हुए महर्षि के अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' को उसके मूलरूप में स्थापित करने हेतु कृति संकल्पित हैं। उल्लेखनीय है कि आर्य जी ने सन् 2008 तथा 2010 में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों को अपना कुशल नेतृत्व भी प्रदान किया है।

'शताब्दोत्तर रजत जयन्ती' की इस गौरवमयी वेला में आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल एवं आर्य समाज टाण्डा ने सामाजिक एकता एवं न्याय के इस अपराजेय नायक की सेवाओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के उद्देश्य से एक बृहद् अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित करने का निश्चय किया है, जिससे एकता, समता और सद्भावना का संचार देशवासियों में हो सके।

अस्तु, आपसे हमारा सविनय निवेदन है कि 'आनन्दार्यामृताभिनन्दनम्' नामक इस बृहद् अभिनन्दन ग्रन्थ हेतु अपना शुभकामना-संदेश एवं आर्य जी के जीवन से सम्बन्धित प्रमुख क्षणों को लिपिबद्ध करके यथाशीघ्र प्रेषित करने की कृपा करें, जिससे समय की निर्धारित सीमा (30.05.16) में ग्रन्थ का प्रकाशन कार्य पूर्ण हो सके। आपके इस अनुग्रह हेतु हम आपके सदैव आभारी रहेंगे।

-डॉ.वेद प्रकाश आर्य, प्रधान सम्पादक

कार्यालय-19/838, प्रथम तल, रिंगरोड, इन्दिरानगर, लखनऊ-226016

चलभाष-09450500138

लखनऊ-समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का निर्वाचन परिणाम

दिनांक २७.०३.१६ को संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. लखनऊ की कार्यकारिणी के पंचवर्षीय निर्वाचन के नामांकन पत्र वापसी दिनांक १६.०३.१६ एवं पदवार सूची प्रकाशन दिनांक २१.०३.१६ के उपरान्त निर्विरोध निर्वाचित पदाधिकारियों एवं प्रतिष्ठित सदस्यों की सूची निम्नवत् घोषित की गई-

प्रधान-श्री देवेन्द्र पाल वर्मा (मुजफ्फर नगर)
उप-प्रधान-डॉ. धीरज सिंह (बुलन्दशहर)
गायत्री दीक्षित (शाहजहाँपुर)
हरपाल सिंह आर्य (सहारनपुर)
राम चन्द्र सिंह आर्य (फर्रूखाबाद)
मनमोहन तिवारी (लखनऊ)
मन्त्री-स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती (हापुड़)
उप-मन्त्री-डा.विशाल सिंह (वाराणसी)
रुद्र पाल आर्य (बिजनौर)
श्रीमती गिरिजा त्रिपाठी (देवरिया)
पंकज जायसवाल (इलाहाबाद)
सुनील कुमार (बुलन्दशहर)
कोषाध्यक्ष-अरविन्द कुमार (मुजफ्फर नगर)
सहायक कोषाध्यक्ष-ज्ञानेन्द्र सिंह (पीलीभीत)
पुस्तकाध्यक्ष-रमाशंकर आर्य (जौनपुर)
सहायक पुस्तकाध्यक्ष-तेजपाल सिंह (गाजियाबाद)
प्रतिष्ठित सदस्य-डा.भानु प्रकाश आर्य (लखनऊ)
चौधरी रणवीर सिंह (सीतापुर),
बेचन सिंह (मिरजापुर)

लखनऊ-समाचार

केन्द्रीय भण्डारण निगम की हिन्दी कार्यशाला

"हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा होने के साथ ही राजभाषा भी है। हिन्दी की किसी अन्य भाषा से प्रतिद्वंद्विता नहीं है। भारत की अन्य भाषायें हिन्दी की सहचारिणी हैं, सहयोगी हैं, हिन्दी भारत में सर्वत्र समझी और बोली जाती है। यह ही भारत की राष्ट्रीय एकता का माध्यम है। भारत सरकार के समस्त उपक्रमों को अधिकार पूर्वक हिन्दी में सारे कार्य करने चाहिए।"

केन्द्रीय भण्डारण निगम, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ द्वारा आयोजित हिन्दी कार्यशाला के समापन दिवस पर हिन्दी के अधिकारी विद्वान् डॉ.वेद प्रकाश आर्य, पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष, जे.एन.एम.पी.जी.कालेज, बाराबंकी (सम्प्रति प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता) ने उक्त विचार व्यक्त किये। आपने कहा कि भारत सरकार की राजभाषा संबन्धी नीति बिल्कुल दुरुस्त है- कमी है तो 'नीयत' की। अब श्री नरेन्द्र मोदी के प्रधान मंत्री बनने के बाद नीति के साथ नीयत भी शत प्रतिशत दुरुस्त है। अतः राजभाषा के संबन्ध में किसी प्रकार के विभ्रम की कोई गुंजाइश नहीं रह गई है। आपने केन्द्रीय वस्तु भण्डारण निगम के हिन्दी प्रयोगों पर संतोष व्यक्त किया और उसकी भावपूर्ण शब्दों की सराहना की।

हिन्दी कार्यशाला के इस कार्यक्रम का कुशल संचालन श्री राकेश सिंहल ने किया तथा संयोजन का कार्य श्री हरिओम चतुर्वेदी ने किया। क्षेत्रीय प्रबंधक श्री आर.के.बंसल ने राजभाषा के प्रति प्रतिबद्धता एवं कार्य व्यापर से परिचित कराया। वरिष्ठ प्रबंधक श्री अभिषेक आनन्द एवं श्रीमती स्वीटी कुमार ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया तथा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। कार्यशाला में हिन्दी के श्रेष्ठ कार्यकर्ताओं को पुरस्कृत किया गया। श्री के.के.पाण्डा एवं एम.एल. झामरिया का आयोजन को पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। *(हरिओम चतुर्वेदी)*

वानप्रस्थियों से समृद्ध हुआ लखनऊ

वैदिक नवसंवत्सर २०७३ वि. के आगमन पर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, शुक्रवार ८ अप्रैल २०१६ को आर्य समाज शृंगार नगर लखनऊ द्वारा निकटवर्ती पार्क में १०१ कुण्डीय यज्ञ सम्पन्न किया गया। यज्ञ का संचालन आचार्य रूपचन्द्र 'दीपक' और पं.गिरजेश कुमार ने किया। समारोह में चार आर्य महानुभावों- (१) श्री दुर्जनजीत सिंह (विकास नगर), (२) श्रीमती विमलेश सिंह (विकास नगर), (३) श्री रमेश चन्द्र त्रिपाठी (इन्दिरा नगर) एवं (४) श्रीमती वीणा कश्यप (शृंगार नगर) को सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में (१) श्री रमेश चन्द्र त्रिपाठी (२) श्री दुर्जनजीत सिंह (३) श्री अभय पाल सिंह और (४) श्री लक्ष्मण प्रसाद आर्य ने वानप्रस्थाश्रम की दीक्षा ग्रहण की। यह दीक्षा आर्य जगत के विद्वान योगी संन्यासी स्वामी अमृतानन्द जी द्वारा दिलायी गयी। वानप्रस्थ दीक्षा लेने के पश्चात इन आर्य महानुभावों का नवीन नामकरण किया गया जो क्रमशः इस प्रकार है-रमेश चन्द्र त्रिपाठी(अमृत मुनि), दुर्जनजीत सिंह (प्रणव मुनि), अभयपाल सिंह (अभय मुनि), लक्ष्मण प्रसाद आर्य (आर्य मुनि)। *(सं.सू.-राकेश माहना, मंत्री)*

उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार

आर्य समाज इन्दिरा नगर के कोषाध्यक्ष श्री अभयपाल सिंह के सुपौत्र- अक्षत सिंह एवं सुपौत्री कु.ध्रुवी सिंह का उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार दि.७ अप्रैल २०१६ को ११/१०८०, इन्दिरा नगर में आचार्य पं.रूपचन्द्र दीपक के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। बड़ी संख्या में नर-नारियों ने सम्मिलित होकर उपनीत को आशीर्वाद प्रदान किया। बालक-बालिका के माता पिता श्रीमती अर्चना सिंह एवं श्री नरेश कुमार सिंह ने आगंतुकों एवं अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

आर्य समाज इन्दिरा नगर

आर्य जगत के प्रख्यात संन्यासी स्वामी अमृतानन्द जी योगाचार्य का ८ अप्रैल से १० अप्रैल २०१६ तक विशेष प्रवचन एवं सत्संग का कार्यक्रम आर्य समाज मन्दिर इन्दिरा नगर में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में शताधिक आध्यात्मिक ज्ञान के पिपासुओं ने लाभ उठाया।

विशेष सूचना - स्वामी अमृतानन्द जी का विशेष योग शिविर २५ मई से ०१ जून २०१६ तक गुरुकुल पौधा, देहरादून में आयोजित किया जा रहा है। योग विद्या के जिज्ञासुगण इस सम्बन्ध में श्री अमृत मुनि (पूर्वनाम रमेश चन्द्र त्रिपाठी) से मो. नं. ०९४५०३६५७७७ पर जानकारी हासिल कर सकते हैं। *(डोरीलाल आर्य)*

कु. देविका ने प्रथम पदभार सँभाला

योगाश्रम, अलीगंज, लखनऊ की आशाओं, अभिलाषाओं की केन्द्र बिन्दु कु. देविका के नई दिल्ली के एक प्रतिष्ठित उपक्रम में कार्याधिकारी नियुक्त होने पर दि.२८.०३.१६ को यज्ञ का आयोजन हुआ तथा देविका को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ दी गईं। डॉ.वेद प्रकाश आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न इस आयोजन में ध्यान योग के सेवकराम आर्य, प्रेममुनि जी वानप्रस्थी, शिवशंकर लाल वैश्य, देवेन्द्र स्वरूप गुप्त, आर.एस.नागपाल, एस.एस.जुत्शी, प्रमोद कुमारी, प्रभा नागू, शोभा सिन्हा, आदर्श गुप्त, उषा निगम एवं मलयज त्रिपाठी ने उपस्थिति दर्ज की। कु.देविका- श्री अभिषेक एवं श्रीमती गीतांजलि की सुपुत्री हैं तथा पर्यावरण विद पाल प्रवीण एवं श्रीमती कमलेश पाल की सुपौत्री हैं।

काव्य गोष्ठी

०७.०२.१६ रविवार को मल्लाही टोला, ठाकुरगंज, लखनऊ में पार्षद श्री अनुराग पाण्डे के संयोजन में काव्यगोष्ठी एवं तहरी भोज का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसकी अध्यक्षता श्री तेजनारायण पाझउे ने की तथा मुख्य अतिथि थे श्री लालजी पाण्डे। श्री राजेन्द्र शुक्ल 'राज' ने कार्यक्रम का संचालन किया। श्री संजीव मिश्र, दिनेश मिश्र, महेश पाण्डेय 'महेश', निर्मलेन्दु शुक्ल, सुश्री रुकैय्या बानो एवं श्रीमती रमा आर्य 'रमा' ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं। श्री अनुराग पाण्डे ने धन्यवाद ज्ञापन किया तथा कवियों को सम्मानित किया। *(सं.सू.रमा आर्य 'रमा')*

श्रद्धांजलि !

'आर्य लोक वार्ता' द्वारा सर्वप्रथम सम्मानित
सर्वाधिक ईमानदार और निष्कलंक आर्यनेता

नैतिक मूल्य मशाल का फैला कर आलोक।
श्री खत्री जगदीश जी, चले गये किस लोक।।
चन्द्रनगर की स्वच्छ छवि उज्ज्वल आर्य समाज।
खत्री ने पहना दिया अमर कीर्ति का ताज।।
निष्कलंक छवि से रुचिर लिखा नवल इतिहास।
'आर्य लोक वार्ता' हृदय करता रहा निवास।।
यह कहना था आपका यदि है दृढ़ विश्वास।
मंजिल मिल ही जायगी होना नहीं हताश।।

श्री जगदीश लाल खत्री
(भू.पू.पुलिस उपाधीक्षक)
भू.पू.प्रधान-आर्य समाज चन्द्रनगर, लखनऊ

लोकार्पण एवं चर्चा

लखनऊ, २७ मार्च। श्रीमती नीरजा द्विवेदी की पुस्तक 'रुहेलखण्ड के परम्परागत लोकगीत' पर चर्चा एवं श्री महेशचंद्र द्विवेदी की प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा नवप्रकाशित पुस्तक 'इन्टरेस्टिंग एक्सपोजर ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन' का लोकार्पण सी.एम.एस.गोमती नगर, लखनऊ में आयोजित हुआ। श्री के.विक्रम राव की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए इसकार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे अमेरिका से पधारे डॉ.गोपाल सिंह।

श्रीमती नीरजा द्विवेदी ने बताया कि वह रुहेलखण्ड के एक कस्बे की रहने वाली हैं उन्होंने अपने बचपन से बच्चे के जन्म, छठी, अन्नप्राशन, जनेऊ, लग्न, विवाह आदि के अवसरों पर एवं विभिन्न त्योहारों, ऋतुओं और पारिवारिक सम्बन्धों के विषय में गाँवों में गाये जाने वाले गीत सुन रखे हैं, जो अत्यंत अपनत्व से भरे एवं कर्णप्रिय होते हैं। रुहेलखण्डी बोली का साहित्य विकसित नहीं हो रहा है अतः इनके लुप्त हो जाने की आशंका है। उन्होंने अनेक ग्रामीण महिलाओं से सम्पर्क कर इन्हें लिखा था, जिसे हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर ने प्रकाशित किया है। डॉ.उषा सिन्हा ने इस पुस्तक को रुहेलखण्डी गीतों के संदर्भ ग्रंथ की संज्ञा दी एवं हिन्दी के विद्यार्थियों तथा शोधार्थियों के लिए अत्यंत लाभप्रद बताया। सुश्री विमल पंत ने कुछ लोकगीतों का सुरम्य गायन प्रस्तुत किया।

श्री महेशचंद्र द्विवेदी, जो पुलिस महानिदेशक के पद से सेवानिवृत्त हुए हैं, ने अपनी पुस्तक पर बोलते हुए कहा कि उनकी पुस्तक भारतीय प्रशासन में अन्तर्निहित अज्ञानता, दम्भ, पाखण्ड एवं स्वार्थ पर व्यंग्यात्मक प्रतिक्रिया है। श्री के.विक्रम राव ने कहा कि इस पुस्तक की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि लेखक ने अपने-पराये का भेदभाव किये बिना सब पर तीखी परन्तु सत्य घटनाओं पर आधारित टिप्पणी की है। डॉ.गोपाल सिंह ने दोनों पुस्तकों के कथ्य एवं शैली की सराहना करते हुए उन्हें संग्रहणीय बताया। कार्यक्रम का संचालन डॉ.अंजना मिश्रा ने किया।

सप्तम भाषा संगोष्ठी

लखनऊ, १६ मार्च। डॉ.विजय कुमार भार्गव की अध्यक्षता में भारतीय भाषा प्रतिष्ठापन राष्ट्रीय परिषद शाखा उत्तर प्रदेश की सप्तम भाषा संगोष्ठी सी.एम.एस. इन्दिरा नगर में सम्पन्न हुई। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि थे दाऊजी गुप्त। कार्यक्रम का आरम्भ देवकी नंदन शांत की वाणी वन्दना 'माँ मुझे गुनगुनाने का वर दे, मेरी सांसों में संगीत भर दे' से हुआ। संस्था की लखनऊ शाखा अध्यक्ष अवकाश प्राप्त डी.जी.पी. महेशचंद्र द्विवेदी ने स्वागत संबोधन किया। डॉ.मिर्जा हसन नासिर ने हिंदी गीत गाया-'सबसे प्यारी जुबां है हिन्दी, सारा हिन्दोस्तां है हिन्दी'। श्री वीरेन्द्र कुमार सक्सेना, डॉ.मोहनलाल अग्रवाल ने राष्ट्रीय प्रार्थनायें कीं। कार्यक्रम का संचालन डॉ.उषा सिन्हा ने किया। डॉ.मोहनलाल अग्रवाल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

वरिष्ठ कवयित्री सम्मानित

प्रेस क्लब, हजरतगंज, लखनऊ में आयोजित ३६वें युवा रचनाकार दिवस के अवसर पर ७ साहित्यकारों को सम्मानित किया गया। युवा रचनाकार मंच द्वारा आयोजित इस समारोह के मुख्य अतिथि थे श्री दिनेश चंद्र अवस्थी, महामंत्री, राज्य कर्मचारी संस्थान। समारोह में विशेष रूप से वरिष्ठ कवयित्री श्रीमती रमा आर्य 'रमा' को लता जैन स्मृति सम्मान प्रदान किया गया। अन्य जो साहित्यकार सम्मानित हुए उनमें डंडा लखनवी, आलोक सोनी, प्रमोद द्विवेदी, आशुतोष वाजपेयी, रामस्वरूप एवं नज्म सुभाष के नाम प्रमुख हैं। समारोह की अध्यक्षता प्रो.नेत्रपाल सिंह ने की। इस अवसर को वाहिद अली वाहिद, आवारा नवीन, रश्मि शील शुक्ल, आदित्य तिवारी एवं महेश प्रसाद पाण्डेय ने अपनी उपस्थिति से गौवान्वित किया।

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

प्रधान संपादक
डॉ0 वेद प्रकाश आर्य
कार्यालय-19/838, प्रथम तल, रिंगरोड, इन्दिरानगर, लखनऊ-226016
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
: 8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
: 9795445800

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
: 9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
: 9450500138

विशेष कार्याधिकारी
श्रीमती निमिषा वाजपेयी
: 9198080000

नवोन्मेष
कृष्णा जी, सिंटेक

E-mail - aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	–	100 रु. वार्षिक
होता सदस्य	–	1,500 रु. वार्षिक
संरक्षक	–	15,000 रु.
प्रतिष्ठापक	–	50,000 रु.

सहयोग राशि निम्न बैंकों की किसी भी शाखा में 'आर्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है-

(1) बैंक-बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC - BARBOVIBHAV
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं. – 46900 1000 00651
खाते का प्रकार-बचत खाता

(2) बैंक-इलाहाबाद बैंक, ए-869, इन्दिरा नगर, लखनऊ।
IFSC - ALLAO211122
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं. – 5022 3541 717
खाते का प्रकार-बचत खाता

प्रतिष्ठापक
श्री आनन्द कुमार आर्य, कोलकाता
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार
डॉ. रजत बत्रा, लखनऊ

संरक्षक
श्री अर्जुनदेव चड्ढा, कोटा, राजस्थान
श्रीमती प्रमोद कुमारी, लखनऊ
श्रीमती शालिनी कुमार, लखनऊ
श्री कौशल किशोर श्रीवास्तव, लखनऊ
श्री जगदीश लाल खत्री, लखनऊ
श्रीमती कुसुम वर्मा, लखनऊ
डॉ. रूपचन्द्र 'दीपक', लखनऊ
श्रीमती बलबीर कपूर, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
श्री रघुनाथ सिंह आर्य, कानपुर
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
श्रीमती रमा आर्य 'रमा' लखनऊ
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई

सलाहकार
श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, लखनऊ

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी-२, हिमांशु सदन, ५-पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' ५३९क/२३४ हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.-इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।